अध्याय ९

गोपीनाथ पट्टनायक का उद्धार

नौंवे अध्याय का सारांश इस प्रकार है। भवानन्द राय का पुत्र गोपीनाथ पट्टनायक सरकारी नौकरी में था, किन्तु उसने कोषागार से कुछ धन आत्मसात् कर लिया। इसलिए राजा प्रतापरुद्र के सबसे बड़े-पुत्र *बड़ जाना* ने उसे मृत्युदण्ड का आदेश दे दिया। फलस्वरूप गोपीनाथ पट्टनायक को मारने के लिए *चांग* पर चढ़ाया गया, किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से उसका उद्धार हो गया। यही नहीं, उसे उच्चतर पद प्राप्त हुआ।

अगण्य-धन्य-चैतन्य-गणानां प्रेम-वन्यया ।
निन्येऽधन्य-जन-स्वान्त-मरूः शश्वदनूपताम् ॥ १॥

अगण्य-धन्य-चैतन्य-गणानां प्रेम-वन्यया ।
निन्येऽधन्य-जन-स्वान्त-मरुः शश्वदनूपताम् ॥ १ ॥

अगण्य—अगणित; **धन्य**—गौरवशाली; **चैतन्य-गणानाम्**—श्री चैतन्य महाप्रभु के परिकरों की; **प्रेम-वन्यया**—परमानन्दमयी प्रेम की बाढ के द्वारा; **निन्ये**—लाया गया; **अधन्य-जन**—अभागे व्यक्तियों के; **स्वान्त-मरुः**—हृदयरूपी मरुभूमि को; **शश्वत्**—सदैव; **अनूपताम्**—जलमय स्थिति में।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के असंख्य गौरवान्वित अनुयायियों ने अभागे जनों के मरुस्थल जैसे हृदयों में भावमय प्रेम की बाढ़ ला दी।

जय जय श्री-कृष्ण-चैतन्य दयामय ।
जय जय नित्यानन्द करुण-हृदय ॥२॥

जय जय श्री-कृष्ण-चैतन्य दयामय ।
जय जय नित्यानन्द करुण-हृदय ॥ २ ॥

जय जय—जय जयकार हो; **श्री-कृष्ण-चैतन्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **दया-मय**—करुणामय; **जय जय**—जय जयकार हो; **नित्यानन्द**—भगवान् श्री नित्यानन्द की; **करुण-हृदय**—जिनका हृदय अत्यन्त करुणामय है।

अनुवाद

सर्वाधिक कृपालु अवतार श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु की जय हो! भगवान् नित्यानन्द की जय हो, जिनका हृदय सदैव करुणापूरित रहता है!

জয়াদ্বৈতাচার্য জয় জয় দয়াময় ।
জয় গৌর-ভক্ত-গণ সব রসময় ॥ ৩ ॥

জয়াদ্বৈতাচার্য্য জয় জয় দয়াময় ।
জয় গৌর-ভক্ত-গণ সব রসময় ॥ ৩ ॥

জয়—জয় হো; **অদ্বৈত-আচার্য্য**—শ্রী অদ্বৈত আচার্য কী; **জয় জয়**—জয় জয়কার হো; **দয়া-ময়**—করুণাময়; **জয়**—জয় হো; **গৌর-ভক্ত-গণ**—শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু কে ভক্তোঁ কী; **সব**—সমস্ত; **রস-ময়**—দিব্য রসময় আনন্দ মেঁ বিভোর।

অনুবাদ

শ্রী অদ্বৈত আচার্য কী জয় হো, জো অত্যন্ত দয়াময় হৈঁ! শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু কে সারে ভক্তোঁ কী জয় হো, জো দিব্য আনন্দ সে সদৈব অভিভূত রহতে হৈঁ!

এই-মত মহাপ্রভু ভক্ত-গণ-সঙ্গে ।
নীলাচলে বাস করেন কৃষ্ণ-প্রেম-রঙ্গে ॥ ৪ ॥

এই-মত মহাপ্রভু ভক্ত-গণ-সঙ্গে ।
নীলাচলে বাস করেন কৃষ্ণ-প্রেম-রঙ্গে ॥ ৪ ॥

এই-মত—इस प्रकार; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भक्त-गण-सङ्गे**—अपने भक्तों के साथ; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी में; **वास करेन**—निवास करते हैं; **कृष्ण-प्रेम-रङ्गे**—परमानन्दमय कृष्ण-प्रेम में निमज्जित होकर।

अनुवाद

इस तरह अपने निजी भक्तों के साथ सदैव कृष्ण-प्रेम में निमग्न श्री चैतन्य महाप्रभु नीलाचल (जगन्नाथ पुरी) में रहे।

अन्तरे-बाहिरे कृष्ण-विरह-तरङ्ग ।
नाना-भावे व्याकुल प्रभुर मन आर अङ्ग ॥५॥

अन्तरे-बाहिरे कृष्ण-विरह-तरङ्ग ।
नाना-भावे व्याकुल प्रभुर मन आर अङ्ग ॥५॥

अन्तरे-बाहिरे—आन्तरिक एवं बाह्य रूप से; **कृष्ण-विरह-तरङ्ग**—कृष्ण विरह की तरंगें; **नाना-भावे**—विविध भावों के द्वारा; **व्याकुल**—व्याकुल; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **मन आर अङ्ग**—मन तथा शरीर।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु सदैव बाहर तथा भीतर से कृष्ण-वियोग की तरंगों का अनुभव करते रहते थे। उनका मन तथा शरीर सदैव विभिन्न आध्यात्मिक विकारों से क्षुब्ध रहता था।

दिने नृत्य-कीर्तन, जगन्नाथ-दरशन ।
रात्र्यै राय-स्वरूप-सने रस-आस्वादन ॥६॥

दिने नृत्य-कीर्तन, जगन्नाथ-दरशन ।
रात्र्यै राय-स्वरूप-सने रस-आस्वादन ॥६॥

दिने—दिन में; **नृत्य-कीर्तन**—नृत्य एवं कीर्तन; **जगन्नाथ-दरशन**—भगवान् जगन्नाथ के दर्शन; **रात्र्यै**—रात्रिकाल में; **राय-स्वरूप-सने**—रामानन्द राय एवं स्वरूप दामोदर के साथ; **रस-आस्वादन**—दिव्य रस का आस्वादन।

अनुवाद

दिन में वे कीर्तन करते, नृत्य करते और मन्दिर में भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करते थे। रात में वे रामानन्द राय तथा स्वरूप दामोदर के साथ दिव्य आनन्द का आस्वादन करते थे।

त्रिजगतेर लोक आसि' करेन दरशन ।
येइ देखे, सेइ पाय कृष्ण-प्रेम-धन ॥ ७ ॥

त्रिजगतेर लोक आसि' करेन दरशन ।
येइ देखे, सेइ पाय कृष्ण-प्रेम-धन ॥ ७ ॥

त्रि-जगतेर—त्रिलोकी के; **लोक**—लोग; **आसि'**—आकर; **करेन दरशन**—दर्शन किये; **येइ देखे**—जिस किसी ने देखा; **सेइ पाय**—उसको प्राप्त हुआ; **कृष्ण-प्रेम-धन**—कृष्ण-प्रेम की अलौकिक निधि।

अनुवाद

तीनों लोकों से लोग श्री चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करने आते थे। जो भी उन्हें देखता, वह कृष्ण-प्रेम का दिव्य धन प्राप्त करता था।

मनुष्येर वेशे देव-गन्धर्व-किन्नर ।
सप्त-पातालेर यत दैत्य विषधर ॥ ८ ॥
मनुष्येर वेशे देव-गन्धर्व-किन्नर ।
सप्त-पातालेर यत दैत्य विषधर ॥ ८ ॥

मनुष्येर वेशे—मानववेश में; **देव-गन्धर्व-किन्नर**—देवगण, गन्धर्वगण एवं किन्नरगण; **सप्त-पातालेर**—सप्त पाताल लोकों के; **यत**—सभी प्रकार के; **दैत्य**—दैत्यगण; **विष-धर**—सर्पगण।

अनुवाद

सातों उच्चतर लोकों के निवासी जिनमें देवता, गन्धर्व तथा किन्नर सम्मिलित थे तथा सातों अधोलोकों (पाताल लोक) के निवासी, जिनमें असुर तथा सर्प सम्मिलित थे, मनुष्य के वेश में श्री चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करने आते थे।

सप्त-द्वीपे नव-खण्डे वैसे यत जन ।
नाना-वेशे आसि' करे प्रभुर दरशन ॥ ९ ॥
सप्त-द्वीपे नव-खण्डे वैसे यत जन ।
नाना-वेशे आसि' करे प्रभुर दरशन ॥ ९ ॥

सप्त-द्वीपे—सप्त द्वीपों में; **नव-खण्डे**—नव खण्डों में; **वैसे**—निवास करनेवाले; **यत जन**—समस्त प्राणी; **नाना-वेशे**—विविध वेशों में; **आसि'**—आकर; **करे प्रभुर दरशन**—श्री चैतन्य महाप्रभु के दर्शन किये।

अनुवाद

सात द्वीप तथा नौ खण्ड़ों से लोग विभिन्न वेशों में श्री चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करने आते थे।

प्रह्लाद, बलि, व्यास, शुक आदि मुनि-गण ।
आसि' प्रभु देखि' प्रेमे हय अचेतन ॥१०॥

प्रह्लाद, बलि, व्यास, शुक आदि मुनि-गण ।
आसि' प्रभु देखि' प्रेमे हय अचेतन ॥१०॥

प्रह्लाद—प्रह्लाद महाराज; **बलि**—बलि महाराज; **व्यास**—व्यासदेव; **शुक**—शुकदेव गोस्वामी; **आदि**—इत्यादि; **मुनि-गण**—महान् मुनिगण; **आसि'**—आकर; **प्रभु देखि'**—श्री चैतन्य महाप्रभु के दर्शन करते हुए; **प्रेमे**—कृष्ण-प्रेम में; **हय अचेतन**—मूर्च्छित हुए।

अनुवाद

प्रह्लाद महाराज, बलि महाराज, श्रील व्यासदेव, शुकदेव गोस्वामी तथा अन्य अनेक बड़े-बड़े मुनि श्री चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करने आते। उनके दर्शन पाकर वे कृष्ण-प्रेम में अचेत हो जाते।

तात्पर्य

कुछ इतिहासविदों के मतानुसार प्रह्लाद महाराज त्रेतायुग में पंजाब प्रान्त के मुलतान नामक स्थान में उत्पन्न हुए थे। उनका जन्म कश्यप वंश के राजा हिरण्यकशिपु के घर हुआ था। प्रह्लाद महाराज भगवान् विष्णु के महान् भक्त थे, किन्तु उनका पिता विष्णु का कट्टर विरोधी था। इस तरह पिता तथा पुत्र की चेतना में अन्तर था, इसलिए असुर पिता प्रह्लाद को तरह-तरह की शारीरिक यातनाएँ देता रहता था। जब यह यातना असह्य हो गई, तो परम भगवान् नृसिंहदेव के रूप में प्रकट हुए और उन्होंने महान् असुर हिरण्यकशिपु का वध किया।

बलि महाराज प्रह्लाद महाराज के पौत्र थे। प्रह्लाद महाराज के पुत्र का नाम विरोचन था, जिनके पुत्र बलि हुए। वामन के रूप में प्रकट होकर बलि महाराज

से तीन पग भूमि माँगकर भगवान् ने तीनों लोकों पर अधिकार जमा लिया। इस तरह बलि महाराज भगवान् वामन के महान् भक्त बने। बलि महाराज के एक सौ पुत्र थे, जिनमें महाराज बाण ज्येष्ठतम थे और अत्यन्त प्रसिद्ध थे।

व्यासदेव महर्षि पराशर के पुत्र थे। व्यासदेव के अन्य नाम हैं सात्यवतेय तथा कृष्ण द्वैपायन बादरायण मुनि। वेदों के अधिकारी विद्वान होने के कारण उन्होंने मूल वेद को सुगमता के विचार से चार विभागों—*साम, यजुः, ऋग्* तथा *अथर्व* में बाँट दिया। वे अठारह पुराणों तथा *ब्रह्मसूत्र* एवं उसकी स्वाभाविक टीका *श्रीमद्भागवत* के लेखक हैं। वे ब्रह्म सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं और नारद मुनि के प्रत्यक्ष शिष्य हैं।

शुकदेव गोस्वामी व्यासदेव के पुत्र हैं। वे ब्रह्म-साक्षात्कार को प्राप्त ब्रह्मचारी थे, किन्तु बाद में वे भगवान् कृष्ण के महान् भक्त बन गये। उन्होंने महाराज परीक्षित को *श्रीमद्भागवत* सुनाई।

বাহিরে ফুকারে লোক, দর্শন না পাঞা ।
'কৃষ্ণ কহ' বলেন প্রভু বাহিরে আসিয়া ॥ ১১ ॥

বাহিরে ফুকারে লোক, দর্শন না পাঞা ।
'কৃষ্ণ কহ' বলেন প্রভু বাহিরে আসিয়া ॥ ১১ ॥

বাহিরে—बाहर; **ফু-কারে**—तुमुल ध्वनि के साथ; **লোক**—लोग; **দর্শন না পাঞা**—दर्शन न पाते हुए; **কৃষ্ণ কহ**—कृष्ण कहो; **বলেন**—बोलते हैं; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **বাহিরে আসিয়া**—बाहर आते हुए।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु को न देख सकने के कारण जनता उनके कमरे के बाहर तुमुल ध्वनि करती। इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु बाहर आते और उनसे कहते, "हरे कृष्ण का कीर्तन करो।"

প্রভুর দর্শনে সব লোক প্রেমে ভাসে ।
এই-মত যায় প্রভুর রাত্রি-দিবসে ॥ ১২ ॥

প্রভুর দর্শনে সব লোক প্রেমে ভাসে ।
এই-মত যায় প্রভুর রাত্রি-দিবসে ॥ ১২ ॥

प्रभुर दर्शने—श्री चैतन्य महाप्रभु के दर्शन करते हुए; **सब लोक**—समस्त लोग; **प्रेमे भासे**—प्रेम में विभोर हुए; **एइ-मत**—इस प्रकार; **याय**—व्यतीत करते; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **रात्रि-दिवसे**—रात्रि एवं दिवस।

अनुवाद

सभी तरह के लोग महाप्रभु का दर्शन करने आते और उन्हें देखने के बाद वे कृष्ण-प्रेम में विभोर हो जाते। इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु अपने दिन और रातें व्यतीत करते रहे।

এক-দিন লোক আসি' প্রভুরে নিবেদিল ।
গোপীনাথেরে 'বড় জানা' চাঙ্গে চড়াইল ॥ ১৩ ॥

एक-दिन लोक आसि' प्रभुरे निवेदिल ।
गोपीनाथेरे 'बड़ जाना' चाङ्गे चड़ाइल ॥ १३ ॥

एक-दिन—एक दिन; **लोक**—लोग; **आसि'**—आये; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **निवेदिल**—निवेदन किया; **गोपीनाथेरे**—गोपीनाथ पट्टनायक को; **बड़ जाना**—राजा प्रतापरूद्र के ज्येष्ठ पुत्र ने; **चाङ्गे चड़ाइल**—चांग पर चढाया गया।

अनुवाद

एक दिन सहसा लोग श्री चैतन्य महाप्रभु के पास आये और उन्हें बतलाया कि, "भवानन्द राय के पुत्र गोपीनाथ पट्टनायक को राजा के ज्येष्ठ पुत्र बड़जाना ने मृत्यु-दण्ड दे दिया है और उसे चाँग पर चढ़ा दिया गया है।

तात्पर्य

चाँग अपराधी व्यक्ति को जान से मार डालने का एक साधन है। यह एक ऊँचा चबूतरा होता था, जिस पर अपराधी व्यक्ति को खड़ा कर दिया जाता था। इस चबूतरे के नीचे खड़ी तलवारें होती थीं। अपराधी व्यक्ति को नीचे तलवारों के ऊपर फेंक दिया जाता था और इस तरह वह मर जाता था। किसी कारणवश गोपीनाथ पट्टनायक को मृत्युदण्ड दिया गया था और इसीलिए उसे चाँग पर खड़ा कर दिया गया था।

তলে খড়্গ পাতি' তারে উপরে ডারিবে ।
প্রভু রক্ষা করেন যবে, তবে নিস্তারিবে ॥ ১৪॥

तले खड्ग पाति' तारे उपरे डारिबे ।
प्रभु रक्षा करेन ग्रबे, तबे निस्तारिबे ॥ १४॥

तले—नीचे; **खड्ग**—तलवारें; **पाति'**—स्थापित कर; **तारे**—उसको; **उपरे**—उपर; **डारिबे**—वह फेंकेगा; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **रक्षा करेन**—रक्षा करेंगे; **ग्रबे**—जब; **तबे**—तब; **निस्तारिबे**—उसका उद्धार होगा।

अनुवाद

उन्होंने बतलाया कि, "बड़-जाना ने चबूतरे के नीचे तलवारें लगा दी हैं, जिन पर गोपीनाथ को फेंक दिया जायेगा। हे प्रभु, यदि आप रक्षा करें तभी वह बच सकता है।

সবংশে তোমার সেবক—ভবানন্দ-রায় ।
তাঁর পুত্র—তোমার সেবকে রাখিতে যুয়ায় ॥ ১৫॥

सवंशे तोमार सेवक—भवानन्द-राय ।
ताँर पुत्र—तोमार सेवके राखिते ग्रुयाय ॥ १५॥

स-वंशे—अपने वंश के साथ; **तोमार**—आपके; **सेवक**—सेवक; **भवानन्द-राय**—भवानन्द राय; **ताँर पुत्र**—उनके पुत्र; **तोमार सेवके**—आपका सेवक; **राखिते**—रक्षा करना; **ग्रुयाय**—उचित है।

अनुवाद

"भवानन्द राय तथा उनका सारा परिवार आपके सेवक हैं। इसलिए यह सर्वथा उपयुक्त होगा कि आप भवानन्द राय के पुत्र को बचा लें।"

প্রভু কহে,—'রাজা কেনে করয়ে তাড়ন?' ।
তবে সেই লোক কহে সব বিবরণ ॥ ১৬॥

प्रभु कहे,—'राजा केने करये ताड़न?' ।
तबे सेइ लोक कहे सब विवरण ॥ १६॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **राजा**—राजा; **केने**—किस कारण से; **करये**

ताड़न—दण्डित करता है; **तबे**—उस समय; **सेइ लोक**—उन लोगों ने; **कहे**—कहा; **सब विवरण**—समस्त वृत्तान्त।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने पूछा, "राजा उसे क्यों दण्ड दे रहा है?" इस पर लोगों ने सारी घटना कह सुनाई।

''गोपीनाथ-पट्टनायक——रामानन्द-भाई ।
सर्व-काल हय तेँह राज-विषयी ॥ १७॥

"गोपीनाथ-पट्टनायक——रामानन्द-भाइ ।
सर्व-काल हय तेंह राज-विषयी ॥ १७॥

गोपीनाथ-पट्टनायक—गोपीनाथ पट्टनायक; **रामानन्द-भाइ**—श्री रामानन्द राय का भाई है; **सर्व-काल**—हर समय; **हय**—है; **तेंह**—वह; **राज-विषयी**—राजा का कोषाध्यक्ष।

अनुवाद

उन्होंने कहा, "रामानन्द राय का भाई गोपीनाथ पट्टनायक सदा से सरकार का खजांची रहा है।

'मालजाठ्या-दण्डपाटे' तार अधिकार ।
साधि' पाड़ि' आनि' द्रव्य दिल राज-द्वार ॥ १८॥

'मालजाठ्या-दण्डपाटे' तार अधिकार ।
साधि' पाड़ि' आनि' द्रव्य दिल राज-द्वार ॥ १८॥

मालजाठ्या-दण्डपाटे—मालजाठ्या दण्डपाट नामक स्थान में; **तार**—उनका; **अधिकार**—अधिकार; **साधि'**—अभ्यर्थना कर; **पाड़ि'**—समाहरण कर; **आनि'**—लाकर; **द्रव्य**—सम्पत्ति; **दिल**—दिया; **राज-द्वार**—राजद्वार को।

अनुवाद

"वह मालजाठ्या दण्डपाट नामक स्थान में नौकरी करता था, वहीं वह संग्रह कर धन (राजस्व) एकत्र करता था और उसे सरकारी खजाने में जमा करता था।

দুই-লক্ষ কাহন তার ঠাঞি বাকী হ-ইল ।
দুই-লক্ষ কাহন কৌড়ি রাজা ত' মাগিল ॥১৯॥

दुइ-लक्ष काहन तार ठाञि बाकी ह-इल ।
दुइ-लक्ष काहन कौड़ि राजा त' मागिल ॥ १९ ॥

दुइ-लक्ष—कौडीओं के २,००,००० काहन (एक काहन १,२८० कौडीओं के बराबर होता है); **तार ठाञि**—उनसे; **बाकी ह-इल**—बाकी रहे; **दुइ-लक्ष काहन**—२,००,००० कहान; **कौड़ि**—शङ्खों को; **राजा**—राजा ने; **त'**—निश्चयपूर्वक; **मागिल**—माँगा।

अनुवाद

"एक बार जब उसने एकत्र की गई राशि जमा की, तो दो लाख काहन कौड़ियाँ उस पर बकाया रह गई। इसलिए राजा ने वह राशि माँगी।

তেঁহ কহে,—"স্থূল-দ্রব্য নাহি যে গণি' দিব ।
ক্রমে-ক্রমে বেচি' কিনি' দ্রব্য ভরিব ॥২০॥

तेंह कहे,—"स्थूल-द्रव्य नाहि ग्रे गणि' दिब ।
क्रमे-क्रमे वेचि' किनि' द्रव्य भरिब ॥ २० ॥

तेंह कहे—उसने कहा; **स्थूल-द्रव्य**—नकद धन; **नाहि**—नहीं है; **ग्रे**—जिसको; **गणि'**—गिनकर; **दिब**—मैं दे सकूँ; **क्रमे-क्रमे**—क्रमशः; **वेचि' किनि'**—क्रय एवं विक्रय करके; **द्रव्य**—सम्पत्ति को; **भरिब**—मैं भर दूँगा।

अनुवाद

"गोपीनाथ पट्टनायक ने उत्तर दिया, 'मेरे पास धन नहीं कि मैं आपको तुरन्त नकद दे सकूँ। कृपया मुझे कुछ समय दीजिये। मैं धीरे-धीरे अपना सामान बेचकर आपके खजाने में यह राशि जमा कर दूँगा।

ঘোড়া দশ-বার হয়, লহ' মূল্য করি'" ।
এত বলি' ঘোড়া আনে রাজ-দ্বারে ধরি' ॥২১॥

घोड़ा दश-बार हय, लह' मूल्य करि'" ।
एत बलि' घोड़ा आने राज-द्वारे धरि' ॥ २१ ॥

घोड़ा—अश्व; **दश-बार**—दस से बारह; **हय**—हैं; **लह'**—ले लो; **मूल्य करि'**—उचित

मूल्य पर; **एत बलि'**—इतना कहते हुए; **घोड़ा आने**—वे अश्वों को ले आया; **राज-द्वारे धरि'**—राजा के द्वार पर रखते हुए।

अनुवाद

"'मेरे पास दस-बारह अच्छे घोड़े हैं। आप उन्हें उचित मूल्य पर तुरन्त ले लें।' यह कहकर वह सारे घोड़े राजा के द्वार पर ले आया।

एक राज-पुत्र घोड़ार मूल्य भाल जाने ।
तारे पाठाइल राजा पात्र-मित्र सने ॥२२॥

एक राज-पुत्र घोड़ार मूल्य भाल जाने ।
तारे पाठाइल राजा पात्र-मित्र सने ॥ २२॥

एक—एक; **राज-पुत्र**—राजकुमार; **घोड़ार मूल्य**—अश्वों का मूल्य; **भाल**—सम्यक् रूप से; **जाने**—जानता था; **तारे पाठाइल**—उसको प्रेषित किया; **राजा**—राजा ने; **पात्र-मित्र सने**—आमात्यवर्ग एवं सुहृद्गण सहित।

अनुवाद

"राजकुमारों में से एक यह जानता था कि घोड़ों का ठीक से मूल्य कैसे आँका जाता है। इसलिए राजा ने उसे अपने मन्त्रियों तथा मित्रों के साथ आने के लिए बुला भेजा।

सेई राज-पुत्र मूल्य करे घाटाञा ।
गोपीनाथेर क्रोध हैल मूल्य शुनिया ॥२३॥

सेइ राज-पुत्र मूल्य करे घाटाञा ।
गोपीनाथेर क्रोध हैल मूल्य शुनिया ॥ २३॥

सेइ—उस; **राज-पुत्र**—राजकुमार ने; **मूल्य**—मूल्यांकन; **करे**—किया; **घाटाञा**—लाघत लाते हुए; **गोपीनाथेर**—गोपीनाथ का; **क्रोध हैल**—क्रोध उत्पन्न हुआ; **मूल्य शुनिया**—मूल्य सुनकर।

अनुवाद

"किन्तु उस राजकुमार ने जानबूझकर घोड़ों के मूल्य का अनुमान घटा दिया। जब गोपीनाथ पट्टनायक ने लगाया हुआ मूल्य सुना, तो वह अत्यधिक क्रुद्ध हुआ।

সেই রাজ-পুত্রের স্বভাব,—গ্রীবা ফিরায় ।
ঊর্ধ্ব-মুখে বার-বার ইতি-উতি চায় ॥২৪॥

सेइ राज-पुत्रेर स्वभाव,—ग्रीवा फिराय ।
ऊर्ध्व-मुखे बार-बार इति-उति चाय ॥ २४॥

सेइ राज-पुत्रेर—उस राजकुमार का; **स्वभाव**—स्वभाव; **ग्रीवा फिराय**—ग्रीवा को घुमाता है; **ऊर्ध्व-मुखे**—ऊपर की ओर मुख कर; **बार-बार**—पुनः पुनः; **इति-उति**—यहाँ वहाँ; **चाय**—देखता है।

अनुवाद

"उस राजकुमार को अपनी गर्दन घुमाने तथा आकाश की ओर ताकने की तथा बार-बार इधर-उधर देखने की आदत थी।

তারে নিন্দা করি' কহে সগর্ব বচনে ।
রাজা কৃপা করে তাতে ভয় নাহি মানে ॥২৫॥

तारे निन्दा करि' कहे सगर्व वचने ।
राजा कृपा करे ताते भय नाहि माने ॥ २५॥

तारे—उसको; **निन्दा करि'**—निन्दित करते हुए; **कहे**—बोला; **स-गर्व वचने**—अहंकार भरे वचनों को; **राजा**—राजा; **कृपा करे**—उसके ऊपर दयालु थे; **ताते**—अतएव; **भय नाहि माने**—वह भयभीत नहीं था।

अनुवाद

"गोपीनाथ पट्टनायक ने उस राजकुमार की आलोचना की। वह उस राजकुमार से भयभीत नहीं था, क्योंकि राजा उस पर अत्यन्त दयालु रहता था।

'আমার ঘোড়া গ্রীবা না ফিরায় ঊর্ধ্বে নাহি চায় ।
তাতে ঘোড়ার মূল্য ঘাটি করিতে না যুয়ায়' ॥২৬॥

'आमार घोड़ा ग्रीवा ना फिराय ऊर्ध्वे नाहि चाय ।
ताते घोड़ार मूल्य घाटि करिते ना य़ुयाय' ॥ २६॥

आमार घोड़ा—मेरे अश्व; **ग्रीवा**—गर्दन को; **ना फिराय**—नहीं घुमाते हैं; **ऊर्ध्वे**—ऊपर

की ओर; **नाहि चाय**—नहीं देखते हैं; **ताते**—इसलिए; **घोड़ार मूल्य**—अश्वों का दाम; **घाटि करिते**—घटाना; **ना য়ुयाय**—उचित नहीं है।

अनुवाद

"गोपीनाथ पट्टनायक ने कहा, 'मेरे घोड़े कभी अपनी गर्दन नहीं मोड़ते या ऊपर नहीं देखते। इसलिए उनके मूल्य कम नहीं किये जाने चाहिए।'

শুনি' রাজপুত্র-মনে ক্রোধ উপজিল ।
রাজার ঠাঞি যাই' বহু লাগানি করিল ॥ ২৭ ॥

शुनि' राजपुत्र-मने क्रोध उपजिल ।
राजार ठाञि য়াइ' बहु लागानि करिल ॥ २७ ॥

शुनि'—सुनकर; **राज-पुत्र**—राजपुत्र के; **मने**—मन में; **क्रोध**—क्रोध; **उपजिल**—उत्पन्न हुआ; **राजार ठाञि**—राजा के समक्ष; **য়াइ'**—जाकर; **बहु लागानि करिल**—बहुत मिथ्या आरोप लगाये।

अनुवाद

"यह आलोचना सुनकर राजकुमार अत्यन्त क्रुद्ध हुआ। राजा के पास आकर उसने गोपीनाथ पट्टनायक के विरुद्ध कुछ झूठे आरोप लगाये।

"কৌড়ি নাহি দিবে এই, বেড়ায় ছদ্ম করি' ।
আজ্ঞা দেহ যদি,—'চাঙ্গে চড়াঞা ল-ই কৌড়ি' ॥ ২৮ ॥

"कौड़ि नाहि दिबे एइ, बेड़ाय छद्म करि' ।
आज्ञा देह য়दि,—'चाङ्गे चड़ाञा ल-इ कौड़ि' ॥ २८ ॥

कौड़ि—धन; **नाहि दिबे**—नहीं देगा; **एइ**—यह व्यक्ति; **बेड़ाय**—अपव्यय करता है; **छद्म करि'**—किसी बहाने से; **आज्ञा देह য়दि**—यदि आप आदेश दें; **चाङ्गे चड़ाञा**—चाङ्ग पर चढाकर; **ल-इ कौड़ि**—मैं धन को वापस ले लूँगा।

अनुवाद

"उसने कहा, 'यह गोपीनाथ पट्टनायक बकाया लौटाना नहीं चाहता। उल्टे वह बहाना करके उसे बुरी तरह से लुटा रहा है। यदि आप आदेश जारी कर दें, तो मैं उसे चाँग पर चढ़ाकर उससे धन वसूल कर सकता हूँ।'

রাজা বলে,—"যেই ভাল, সেই কর যায় ।
যে উপায়ে কৌড়ি পাই, কর সে উপায়" ॥২৯॥

राजा बले,—"येइ भाल, सेइ कर याय ।
ये उपाये कौड़ि पाइ, कर से उपाय" ॥ २९ ॥

राजा बले—राजा ने कहा; **येइ भाल**—जो भी उत्तम हो; **सेइ कर**—वह करो; **याय**—जाकर; **ये उपाये**—जिस उपाय से; **कौड़ि पाइ**—मैं अपने धन को प्राप्त कर पाऊँ; **कर**—करो; **से उपाय**—ऐसा उपाय।

अनुवाद

"राजा ने उत्तर दिया, 'तुम जिस उपाय को सर्वश्रेष्ठ समझो, वही अपनाओ। तुम जिस भी उपाय से धन संग्रह कर सको वही उचित है।'

রাজ-পুত্র আসি' তারে চাঙ্গে চড়াইল ।
খড়্গ-উপরে ফেলাইতে তলে খড়্গ পাতিল" ॥৩০॥

राज-पुत्र आसि' तारे चाङ्गे चड़ाइल ।
खड़्ग-उपरे फेलाइते तले खड़्ग पातिल" ॥ ३० ॥

राज-पुत्र—राजपुत्र ने; **आसि'**—आकर; **तारे**—उसको; **चाङ्गे**—चांग पर; **चड़ाइल**—चढाया; **खड़्ग-उपरे**—तलवारों के उपर; **फेलाइते**—डालने के लिए; **तले**—नीचे; **खड़्ग पातिल**—उसने तलवारों को बिछा दिया।

अनुवाद

"इस तरह राजकुमार लौट गया, उसने गोपीनाथ पट्टनायक को चाँग के चबूतरे पर चढ़ा दिया और उसके नीचे तलवारें फैला दीं, जिन पर उसे फेंका जाना था।"

শুনি' প্রভু কহে কিছু করি' প্রণয়-রোষ ।
"রাজ-কৌড়ি দিতে নারে, রাজার কিবা দোষ? ॥৩১॥

शुनि' प्रभु कहे किछु करि' प्रणय-रोष ।
"राज-कौड़ि दिते नारे, राजार किबा दोष? ॥ ३१ ॥

शुनि'—सुनकर; **प्रभु कहे**—श्री चैतन्य महाप्रभु बोले; **किछु**—कुछ; **करि' प्रणय-**

रोष—स्नेहमय रोष करते हुए; **राज-कौड़ि**—सरकार के धन को; **दिते नारे**—देने की इच्छा नहीं करता; **राजार**—राजा का; **किबा दोष**—क्या दोष है।

अनुवाद

इस विवरण को सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने स्नेहमय क्रोध से उत्तर दिया। महाप्रभु ने कहा, "गोपीनाथ पट्टनायक राजा को धन नहीं लौटाना चाहता, तो फिर उसे दण्डित करने में राजा का क्या दोष है?

राज-विलाञ्साधि' खाय, नाहि राज-भय ।
दारी-नाटुयारे दिया करे नाना व्यय ॥३२॥

राज-विलात्साधि' खाय, नाहि राज-भय ।
दारी-नाटुयारे दिया करे नाना व्यय ॥ ३२ ॥

राज-विलात्—राजा को अर्पित किया जानेवाला धन का; **साधि'**—संग्रह करके; **खाय**—वह उपभोग करता है; **नाहि राज-भय**—राजा के भय के बिना; **दारी-नाटुयारे**—नृत्यांगनाओं को; **दिया**—देकर; **करे**—करता है; **नाना**—विविध; **व्यय**—अपव्यय।

अनुवाद

"गोपीनाथ पट्टनायक सरकार की ओर से धन संग्रह करने का भार लिये हुए है, किन्तु वह इसका दुरुपयोग करता है। वह राजा से डरे बिना नर्तकी युवतियों को देखने में धन लुटा देता है।

येइ चतुर, सेइ कुरुक राज-विषय ।
राज-द्रव्य शोधि' पाय, तार करुक व्यय'' ॥३३॥

येइ चतुर, सेइ कुरुक राज-विषय ।
राज-द्रव्य शोधि' पाय, तार करुक व्यय" ॥ ३३ ॥

येइ—जो; **चतुर**—चतुर है; **सेइ**—वह व्यक्ति; **कुरुक**—उसको करने दो; **राज-विषय**—राजसेवा; **राज-द्रव्य शोधि'**—राजो के द्रव्य को अर्पण कर; **पाय**—जो भी वह प्राप्त करे; **तार करुक व्यय**—वह उसको व्यय करने दो।

अनुवाद

"यदि कोई बुद्धिमान है, तो वह सरकार की नौकरी करे और सरकार

का धन चुकता करने के बाद जो धनराशि बचे, उसे वह खर्च कर सकता है।"

হেন-কালে আর লোক আইল ধাঞা ।
'বাণীনাথাদি সবংশে লঞা গেল বান্ধিয়া' ॥৩৪॥

হেন-কালে আর লোক আইল ধাঞা ।
'বাণীনাথাদি সবংশে লঞা গেল বান্ধিয়া' ॥ ৩৪॥

হেন-কালে—उस समय; **আর**—एक अन्य; **লোক**—व्यक्ति; **আইল**—आया; **ধাঞা**—बहुत जल्दी में; **বাণীনাথ-আদি**—वाणीनाथ आदि को; **স-বংশে লঞা**—उनके परिवार के साथ; **গেল বান্ধিয়া**—बन्दी बनाया जा चुका है।

अनुवाद

उसी समय एक अन्य व्यक्ति शीघ्र यह सन्देश लेकर आया कि वाणीनाथ राय सपरिवार बन्दी बना लिया गया है।

প্রভু কহে,—"রাজা আপনে লেখার দ্রব্য ল-ইব ।
আমি—বিরক্ত সন্ন্যাসী, তাহে কি করিব?" ॥৩৫॥

প্রভু কহে,—"রাজা আপনে লেখার দ্রব্য ল-ইব ।
আমি—বিরক্ত সন্ন্যাসী, তাহে কি করিব?" ॥ ৩৫॥

প্রভু কহে—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **রাজা**—राजा; **আপনে**—निज; **লেখার দ্রব্য**—अवशिष्ट धन को; **ল-ইব**—ले लेगा; **আমি**—मैं; **বিরক্ত সন্ন্যাসী**—वैरागी संन्यासी; **তাহে**—इस विषय में; **কি করিব**—क्या कर सकता हूँ।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "राजा निश्चित रूप से स्वयं बकाया धनराशि संग्रह करेगा। मैं तो मात्र एक वैरागी संन्यासी हूँ। मैं क्या कर सकता हूँ?"

তবে স্বরূপাদি যত প্রভুর ভক্ত-গণ ।
প্রভুর চরণে সবে কৈলা নিবেদন ॥৩৬॥

तबे स्वरूपादि यत प्रभुर भक्त-गण ।
प्रभुर चरणे सबे कैला निवेदन ॥ ३६ ॥

तबे—उस समय; **स्वरूप-आदि**—स्वरूप दामोदर आदि; **यत**—समस्त; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **भक्त-गण**—भक्तों ने; **प्रभुर चरणे**—प्रभु के चरणों में; **सबे**—सभी ने; **कैला निवेदन**—निवेदन किया।

अनुवाद

तभी स्वरूप दामोदर गोस्वामी इत्यादि सारे भक्त श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों पर गिर पड़े और सबों ने निम्नलिखित याचना की।

''रामानन्द-रायेर गोष्ठी, सब—तोमार 'दास' ।
तोमार उचित नहे ऐछन उदास'' ॥ ३७ ॥
"रामानन्द-रायेर गोष्ठी, सब—तोमार 'दास' ।
तोमार उचित नहे ऐछन उदास" ॥ ३७ ॥

रामानन्द-रायेर—रामानन्द राय का; **गोष्ठी**—परिवार; **सब**—समस्त; **तोमार दास**—आपके दास हैं; **तोमार**—आपके लिए; **उचित**—योग्य; **नहे**—नहीं है; **ऐछन**—इस प्रकार की; **उदास**—उदासीनता।

अनुवाद

"रामानन्द राय के परिवार के सारे सदस्य आपके सनातन सेवक हैं। अब वे संकट में हैं। आपके लिए इस तरह से उनके प्रति उदासीन रहना उचित नहीं है।"

शुनि' महाप्रभु कहे सक्रोध वचने ।
''मोरे आज्ञा देह' सबे, याङ राज-स्थाने! ॥ ३८ ॥
शुनि' महाप्रभु कहे सक्रोध वचने ।
"मोरे आज्ञा देह' सबे, याङ राज-स्थाने! ॥ ३८ ॥

शुनि'—सुनकर; **महाप्रभु**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु; **कहे**—बोले; **स-क्रोध वचने**—रोषयुक्त वचन; **मोरे**—मुझे; **आज्ञा देह'**—आप आदेश देते हैं; **सबे**—सभी; **याङ**—मुझे जाना चाहिए; **राज-स्थाने**—राजा के स्थान पर।

अनुवाद

यह सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु क्रुद्ध मुद्रा में बोले—"तुम लोग मुझे आज्ञा देना चाहते हो कि मैं राजा के पास जाऊँ।"

তোমা-সবার এই মত,—রাজ-ঠাঞি যাঞা ।
কৌড়ি মাগি' লঁ মুঞি আঁচল পাতিয়া ॥৩৯॥

तोमा-सबार एइ मत,—राज-ठाञि याञा ।
कौड़ि मागि' लङ्‌ मुञि आँचल पातिया ॥ ३९ ॥

तोमा-सबार—आप सभी का; **एइ मत**—यह अभिमत है; **राज-ठाञि याञा**—राजा के पास जाकर; **कौड़ि मागि'**—कौड़ीयाँ माँगते हुए; **लँ**—लेकर; **मुञि**—मैं; **आँचल पातिया**—वस्त्र बिछाकर।

अनुवाद

"तुम लोगों का मत है कि मैं राजा के महल में जाऊँ और उससे धन माँगने के लिए अपना वस्त्र फैलाऊँ।

পাঁচ-গণ্ডার পাত্র হয় সন্ন্যাসী ব্রাহ্মণ ।
মাগিলে বা কেনে দিবে দুই-লক্ষ কাহন?" ॥৪০॥

पाँच-गण्डार पात्र हय सन्न्यासी ब्राह्मण ।
मागिले वा केने दिबे दुइ-लक्ष काहन?" ॥ ४० ॥

पाँच-गण्डार—पाँच गण्डों के; **पात्र**—ग्रहण करने के पात्र; **हय**—हैं; **सन्न्यासी ब्राह्मण**—संन्यासी एवं ब्राह्मण; **मागिले**—माँगकर; **वा**—अथवा; **केने**—क्यों; **दिबे**—दिये जाने चाहिए; **दुइ-लक्ष काहन**—२,००,००० कौड़ीओं के काहन।

अनुवाद

"निस्सन्देह, एक संन्यासी या ब्राह्मण पाँच गण्डे तक माँग सकता है, किन्तु उसे दो लाख काहन कौड़ियों की अनुपयुक्त राशि क्यों दी जाय?"

হেন-কালে আর লোক আইল ধাঞা ।
খড়্গের উপরে গোপীনাথে দিতেছে ডারিয়া ॥৪১॥

हेन-काले आर लोक आइल धाञा ।
खड़ेगर उपरे गोपीनाथे दितेछे डारिया ॥ ४१ ॥

हेन-काले—उसी समय; **आर**—अन्य; **लोक**—व्यक्ति; **आइल**—आया; **धाञा**—दौड़ता हुआ; **खड़ेगर उपरे**—तलवारों के ऊपर; **गोपीनाथे**—गोपीनाथ को; **दितेछे डारिया**—वे फेंक रहे हैं।

अनुवाद

तब एक अन्य व्यक्ति यह समाचार लेकर आया कि गोपीनाथ को तलवारों की नोकों पर फेंकने के लिए पूरी प्रस्तुति हो गई है।

शुनि' प्रभुर गण प्रभुरे करे अनुनय ।
प्रभु कहे,—"आमि भिक्षुक, आमा हैते किछु नय ॥ ४२ ॥

शुनि'—सुनकर; **प्रभुर गण**—प्रभु के भक्तों ने; **प्रभुरे करे अनुनय**—प्रभु से अनुनय किया; **प्रभु कहे**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **आमि भिक्षुक**—मैं एक भिक्षुक हूँ; **आमा हैते किछु नय**—मेरे द्वारा इस विषय में कुछ नहीं हो सकता।

अनुवाद

यह समाचार सुनकर सारे भक्तों ने फिर से महाप्रभु से याचना की, किन्तु महाप्रभु ने उत्तर दिया, "मैं तो एक भिक्षुक हूँ। इस विषय में कुछ भी करना मेरे लिए सम्भव नहीं है।"

तातेरक्षा करिते यदि हय सबार मने ।
सबे मेलि' जानाह जगन्नाथेर चरणे ॥ ४३ ॥

तातेरक्षा करिते यदि हय सबार मने ।
सबे मेलि' जानाह जगन्नाथेर चरणे ॥ ४३ ॥

तातेरक्षा करिते—अतएव; **रक्षा करिते**—रक्षा करने के लिए; **यदि**—यदि; **हय**—है; **सबार**—आप सभी का; **मने**—मन; **सबे मेलि'**—सब मिलकर; **जानाह**—प्रार्थना करो; **जगन्नाथेर चरणे**—भगवान् जगन्नाथ के चरणों में।

अनुवाद

"इसलिए यदि तुम लोग उसे बचाना चाहते हो, तो तुम सबों को मिलकर भगवान् जगन्नाथ के चरणकमलों पर प्रार्थना करनी चाहिए।

ঈশ্বর জগন্নাথ,——যাঁর হাতে সর্ব 'অর্থ' ।
কর্তুমকর্তুমন্যথা করিতে সমর্থ" ॥৪৪॥

ईश्वर जगन्नाथ,——य़ाँर हाते सर्व 'अर्थ' ।
कर्तुमकर्तुमन्यथा करिते समर्थ" ॥ ४४॥

ईश्वर—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **य़ाँर हाते**—जिनके हाथों में; **सर्व अर्थ**—समस्त शक्तियाँ हैं; **कर्तुम्**—करना; **अकर्तुम्**—न करना; **अन्यथा**—अन्यथा ही कर देना; **करिते**—करने में; **समर्थ**—सक्षम हैं।

अनुवाद

"भगवान् जगन्नाथ पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं। उनमें सारी शक्तियाँ हैं। इसलिए वे स्वतन्त्र होकर कर्म कर सकते हैं और जो चाहें बना सकते हैं या बिगाड़ सकते हैं।"

ইহাঁ যদি মহাপ্রভু এতেক কহিলা ।
হরিচন্দন-পাত্র যাই' রাজারে কহিলা ॥৪৫॥

इहाँ य़दि महाप्रभु एतेक कहिला ।
हरिचन्दन-पात्र य़ाइ' राजारे कहिला ॥ ४५॥

इहाँ—यहाँ पर; **य़दि**—जब; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **एतेक कहिला**—इस प्रकार से बोले; **हरिचन्दन-पात्र**—हरिचन्दन पात्र नामक अधिकारी ने; **य़ाइ'**—जाकर; **राजारे कहिला**—राजा को सूचित किया।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने इस प्रकार उत्तर दिया, तब हरिचन्दन पात्र नामक एक अधिकारी ने राजा के पास जाकर यह कहा।

"গোপীনাথ-পট্টনায়ক——সেবক তোমার ।
সেবকের প্রাণ-দণ্ড নহে ব্যবহার ॥৪৬॥

"गोपीनाथ-पट्टनायक—सेवक तोमार ।
सेवकेर प्राण-दण्ड नहे व्यवहार ॥ ४६ ॥

गोपीनाथ-पट्टनायक—गोपीनाथ पट्टनायक; **सेवक तोमार**—आपके सेवक; **सेवकेर प्राण-दण्ड**—सेवक को प्राणदण्ड; **नहे**—नहीं है; **व्यवहार**—समुचित आचार।

अनुवाद

उसने कहा, "गोपीनाथ पट्टनायक आपका आज्ञाकारी सेवक है। एक सेवक को प्राणदण्ड देना उचित आचरण नहीं है।

বিশেষ তাহার ঠাঞি কৌড়ি বাকী হয় ।
প্রাণ নিলে কিবা লাভ? নিজ ধন-ক্ষয় ॥ ৪৭ ॥

বিশেষ তাহার ঠাঞি কৌড়ি বাকী হয় ।
প্রাণ নিলে কিবা লাভ? নিজ ধন-ক্ষয় ॥ ৪৭ ॥

বিশেষ—বিশেষ রূপ से; **তাহার ঠাঞি**—उसके पास से; **কৌড়ি**—कौड़ीयों का; **বাকী**—ऋण; **হয়**—है; **প্রাণ নিলে**—यदि प्राण हर लिये जाते हैं; **কিবা**—कौनसा; **লাভ**—लाभ; **নিজ**—अपने; **ধন**—धन का; **ক্ষয়**—नाश।

अनुवाद

"उसका इतना ही दोष है कि उस पर सरकार का कुछ बकाया है। किन्तु यदि उसे मार डाला जाता है, तो इससे क्या लाभ होगा? सरकार तो घाटे में रहेगी, क्योंकि तब उसे धन नहीं मिल पायेगा।

যথার্থ মূল্যে ঘোড়া লহ, যেবা বাকী হয় ।
ক্রমে ক্রমে দিবে, ব্যর্থ প্রাণ কেনে লয়'' ॥ ৪৮ ॥

যথার্থ মূল্যে ঘোড়া লহ, যেবা বাকী হয় ।
ক্রমে ক্রমে দিবে, ব্যর্থ প্রাণ কেনে লয়" ॥ ৪৮ ॥

যথা-অর্থ মূল্যে—उचित दामों पर; **ঘোড়া লহ**—अश्वों को ले लीजिए; **যেবা**—जो कुछ भी; **বাকী হয়**—अवशिष्ट रहे; **ক্রমে ক্রমে**—धीरे धीरे; **দিবে**—वह दे देगा; **ব্যর্থ**—व्यर्थ ही; **প্রাণ**—उसका जीवन; **কেনে**—क्यो; **লয়**—आप ले रहे हैं।

अनुवाद

"अच्छा यह होगा कि घोड़ों को उचित मूल्य पर ले लिया जाय और

शेष राशि उसे धीरे-धीरे चुकता करने दिया जाय। आप उसे व्यर्थ क्यों प्राणदण्ड दे रहे हैं?"

राजा कहे,—"एइ बात्‌ आमि नाहि जानि ।
प्राण केने ल-इब, तार द्रव्य चाहि आमि ॥४९॥

राजा कहे,—"एइ बात्‌ आमि नाहि जानि ।
प्राण केने ल-इब, तार द्रव्य चाहि आमि ॥४९॥

राजा कहे—राजा ने कहा; **एइ बात्‌**—यह समाचार; **आमि**—मैं; **नाहि जानि**—नहीं जानता; **प्राण**—उसका जीवन; **केने**—क्यों; **ल-इब**—मुझे लेना चाहिए; **तार**—उसका; **द्रव्य**—धन; **चाहि आमि**—मुझे चाहिए।

अनुवाद

राजा ने आश्चर्यपूर्वक उत्तर दिया, "मैं इसके बारे में कुछ नहीं जानता। उसके प्राण क्यों लिये जायें? मैं तो उससे केवल धन चाहता हूँ।

तुमि याइ' कर ताहाँ सर्व समाधान ।
द्रव्य यैछे आइसे, आर रहे तार प्राण" ॥५०॥

तुमि याइ' कर ताहाँ सर्व समाधान ।
द्रव्य यैछे आइसे, आर रहे तार प्राण" ॥५०॥

तुमि—तुम; **याइ'**—जाकर; **कर**—करो; **ताहाँ**—वहाँ पर; **सर्व समाधान**—सब समाधान; **द्रव्य**—धन; **यैछे**—जिस प्रकार से; **आइसे**—आ जाए; **आर**—और; **रहे**—रह पाए; **तार**—उसका; **प्राण**—जीवन।

अनुवाद

"वहाँ जाओ और सब कुछ व्यवस्थित कर लो। मैं तो द्रव्य चाहता हूँ, उसके प्राण नहीं।"

तबे हरिचन्दन आसि' जानारे कहिल ।
चाङ्गे हैते गोपीनाथे शीघ्र नामाइल ॥५१॥

तबे हरिचन्दन आसि' जानारे कहिल ।
चाङ्गे हैते गोपीनाथे शीघ्र नामाइल ॥५१॥

तबे—उस समय; **हरिचन्दन**—हरिचन्दन पात्र ने; **आसि'**—आकर; **जानारे कहिल**—राजकुमार को सूचित किया; **चाङ्गे हैते**—चांग मण्डप पर से; **गोपीनाथे**—गोपीनाथ को; **शीघ्र**—जल्दी ही; **नामाइल**—नीचे उतारा।

अनुवाद

तब हरिचन्दन लौट आया और राजकुमार को राजा की इच्छा बतलाई। गोपीनाथ पट्टनायक को तुरन्त ही चाँग से उतार लिया गया।

'द्रव्य देह' राजा मागे—उपाय पूछिल ।
'यथार्थ-मूल्ये घोड़ा लह', तेँह त' कहिल ॥५२॥

'द्रव्य देह' राजा मागे—उपाय पुछिल ।
'यथार्थ-मूल्ये घोड़ा लह', तेंह त' कहिल ॥५२॥

द्रव्य देह—बकाया राशि दे दो; **राजा मागे**—राजा माँगते हैं; **उपाय**—प्रणाली; **पुछिल**—को पूछा; **यथा-अर्थ-मूल्ये**—उचित मूल्य पर; **घोड़ा लह**—अश्वों का प्रतिग्रहण करो; **तेंह त' कहिल**—उन्होंने कहा।

अनुवाद

तब उसे बताया गया कि राजा ने उससे बकाया राशि की माँग की है और पूछा गया कि वह चुकता करने के लिए कौन सा उपाय करेगा। उसने उत्तर दिया, "कृपया उचित मूल्य पर मेरे घोड़े ले लीजिये।"

'क्रमे क्रमे दिमु, आर यत किछु पारि ।
अविचारे प्राण लह,—कि बलिते पारि?' ॥५३॥

'क्रमे क्रमे दिमु, आर यत किछु पारि ।
अविचारे प्राण लह,—कि बलिते पारि?' ॥५३॥

क्रमे क्रमे—धीरे धीरे; **दिमु**—मैं दूँगा; **आर**—अधिक; **यत**—जितना; **किछु**—जो कुछ; **पारि**—मैं कर सकता हूँ; **अविचारे**—बिना विचार किये; **प्राण लह**—तुम मेरे प्राण लेते हो; **कि बलिते पारि**—मैं क्या कह सकता हूँ।

अनुवाद

"मैं धीरे-धीरे शेष राशि चुकता कर दूँगा। किन्तु आप बिना विचार किये मेरे प्राण लेने जा रहे थे। भला मैं क्या कह सकता हूँ?"

যথার্থ মূল্য করি' তবে সব ঘোড়া ল-ইল ।
আর দ্রব্যের মুদ্দতী করি' ঘরে পাঠাইল ॥৫৪॥

য়থার্থ মূল্য করি' তবে সব ঘোড়া ল-ইল ।
আর দ্রব্যের মুদ্দতী করি' ঘরে পাঠাইল ॥৫৪॥

য়থা-অর্থ মূল্য করি'—यथोचित मूल्यांकन करते हुए; **তবে**—तब; **সব**—सब; **ঘোড়া**—अश्वों को; **ল-ইল**—ले लिया; **আর দ্রব্যের**—अवशिष्ट राशि के; **মুদ্দতী করি'**—भुगतान का समय निर्धारित करके; **ঘরে পাঠাইল**—घर भेज दिया।

अनुवाद

तब सरकार ने उचित मूल्य पर सारे घोड़े ले लिये, शेष राशि चुकाने के लिए समय निर्धारित कर दिया गया और गोपीनाथ पट्टनायक को मुक्त कर दिया गया।

এথা প্রভু সেই মনুষ্যেরে প্রশ্ন কৈল ।
"বাণীনাথ কি করে, যবে বান্ধিয়া আনিল?" ॥৫৫॥

এথা প্রভু সেই মনুষ্যেরে প্রশ্ন কৈল ।
"বাণীনাথ কি করে, য়বে বান্ধিয়া আনিল?" ॥৫৫॥

এথা—वहाँ पर; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **সেই মনুষ্যেরে**—जो सन्देशवाहक था उसको; **প্রশ্ন কৈল**—पूछा; **বাণীনাথ কি করে**—वाणीनाथ क्या कर रहा था; **য়বে**—जब; **বান্ধিয়া আনিল**—वे बाँधकर वहाँ पर लाया गया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने सन्देशवाहक से पूछा, "जब वाणीनाथ को बन्दी बनाकर वहाँ लाया गया, तब वह क्या कर रहा था?"

সে কহে—"বাণীনাথ নির্ভয়ে লয় কৃষ্ণ-নাম ।
'হরে কৃষ্ণ, হরে কৃষ্ণ' কহে অবিশ্রাম ॥৫৬॥

সে কহে—"বাণীনাথ নির্ভয়ে লয় কৃষ্ণ-নাম ।
'হরে কৃষ্ণ, হরে কৃষ্ণ' কহে অবিশ্রাম ॥৫৬॥

সে কহে—उसने उत्तर दिया; **বাণীনাথ**—वाणीनाथ; **নির্ভয়ে**—निर्भय होकर; **লয় কৃষ্ণ-**

नाम—हरे कृष्ण महामन्त्र का जप कर रहा था; **हरे कृष्ण, हरे कृष्ण**—हरे कृष्ण हरे कृष्ण का; **कहे अविश्राम**—सतत उच्चारण कर रहा था।

अनुवाद

सन्देशवाहक ने उत्तर दिया, "वह निर्भय होकर लगातार महामन्त्र का—हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण, हरे हरे। हरे राम, हरे राम, राम राम, हरे हरे का—कीर्तन कर रहा था।

सङ्ख्या लागि' दुइ-हाते अङ्गुलीते लेखा ।
सहस्रादि पूर्ण हैले, अङ्गे काटे रेखा'' ॥५७॥

सङ्ख्या लागि' दुइ-हाते अङ्गुलीते लेखा ।
सहस्रादि पूर्ण हैले, अङ्गे काटे रेखा" ॥५७॥

सङ्ख्या लागि'—संख्या को गिनने के लिए; **दुइ-हाते**—दोनों हाथों में; **अङ्गुलीते**—अंगुलियों पर; **लेखा**—अंकित करते हुए; **सहस्र-आदि**—एक हजार बार; **पूर्ण हैले**—जब समाप्त हुआ; **अङ्गे**—शरीर पर; **काटे रेखा**—रेखा को अंकित करता है।

अनुवाद

"उसने दोनों हाथों की अंगुलियों पर जप की गिनती की और जब वह एक हजार बार जप पूरा कर लेता, तो वह अपने शरीर पर एक चिह्न बना लेता।"

शुनि' महाप्रभु ह-इला परम आनन्द ।
के बुझिते पारे गौरेर कृपा-छन्द-बन्ध? ॥५८॥

शुनि' महाप्रभु ह-इला परम आनन्द ।
के बुझिते पारे गौरेर कृपा-छन्द-बन्ध? ॥५८॥

शुनि'—सुनकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ह-इला**—हुए; **परम आनन्द**—परम आनन्दित; **के बुझिते पारे**—कौन समझ सकता है; **गौरेर**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु की; **कृपा-छन्द-बन्ध**—उनके भक्त के ऊपर की हुइ कृपा को।

अनुवाद

यह समाचार सुनकर महाप्रभु अतीव प्रसन्न हुए। भला अपने भक्त पर महाप्रभु की कृपा को कौन समझ सकता है?

হেন-কালে কাশী-মিশ্র আইলা প্রভু-স্থানে ।
প্রভু তাঁরে কহে কিছু সোদ্বেগ-বচনে ॥ ৫৯ ॥

হেন-কালে কাশী-মিশ্র আইলা প্রভু-স্থানে ।
প্রভু তাঁরে কহে কিছু সোদ্বেগ-বচনে ॥ ৫৯ ॥

হেন-কালে—উসী সময়; **কাশী-মিশ্র**—কাশী মিশ্র; **আইলা**—আয়ে; **প্রভু-স্থানে**—শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু কে স্থান পর; **প্রভু**—শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু নে; **তাঁরে**—উনকো; **কহে**—কহা; **কিছু**—কুছ; **স-উদ্বেগ**—উদ্বেগযুক্ত; **বচনে**—বচন।

অনুবাদ

উসী সময কাশী মিশ্র শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু কে আবাস পর আয়ে ঔর মহাপ্রভু উনসে কুছ উদ্বেগ কে সাথ বাতেঁ করতে রহে।

"ইহাঁ রহিতে নারি, যামু আলালনাথ ।
নানা উপদ্রব ইহাঁ, না পাই সোয়াথ" ॥ ৬০ ॥

"ইহাঁ রহিতে নারি, য়ামু আলালনাথ ।
নানা উপদ্রব ইহাঁ, না পাই সোয়াথ" ॥ ৬০ ॥

ইহাঁ রহিতে নারি—মৈঁ যহাঁ নহীং রহ সকতা; **য়ামু আলালনাথ**—মৈঁ আলালনাথ জাঊঁগা; **নানা**—বিবিধ; **উপদ্রব**—উপদ্রব; **ইহাঁ**—যহাঁ; **না পাই**—মৈঁ নহীং প্রাপ্ত কর সকতা; **সোয়াথ**—বিশ্রাম।

অনুবাদ

মহাপ্রভু নে কহা, "অব মৈঁ যহাঁ ঔর অধিক নহীং ঠহর সকতা। মৈঁ আলালনাথ জাঊঁগা। যহাঁ পর অনেক উপদ্রব হোতে রহতে হৈং ঔর মৈঁ তনিক ভী বিশ্রাম নহীং কর পাতা।

ভবানন্দ-রায়ের গোষ্ঠী করে রাজ-বিষয় ।
নানা-প্রকারে করে তারা রাজ-দ্রব্য ব্যয় ॥ ৬১ ॥

ভবানন্দ-রায়ের গোষ্ঠী করে রাজ-বিষয় ।
নানা-প্রকারে করে তারা রাজ-দ্রব্য ব্যয় ॥ ৬১ ॥

ভবানন্দ-রায়ের—ভবানন্দ রায় কা; **গোষ্ঠী**—পরিবার; **করে**—সংলগ্ন হৈ; **রাজ-বিষয়**—

सरकारी सेवा में; **नाना-प्रकारे**—विविध प्रकार से; **करे**—करते हैं; **तारा**—वे सभी; **राज-द्रव्य व्यय**—राजद्रव्यों का व्यय।

अनुवाद

"भवानन्द राय के परिवार के सारे सदस्य सरकारी नौकरी में लगे हैं, किन्तु वे सरकारी धन का व्यय नाना प्रकार से करते हैं।

राजार कि दोषः राजा निज-द्रव्य चाय ।
दिते नारे द्रव्य, दण्ड आमारे जानाय ॥ ६२॥

राजार कि दोष? राजा निज-द्रव्य चाय ।
दिते नारे द्रव्य, दण्ड आमारे जानाय ॥ ६२॥

राजार—राजा का; **कि दोष**—क्या दोष है; **राजा**—राजा; **निज**—अपना; **द्रव्य**—धन; **चाय**—चाहता है; **दिते नारे**—वे नहीं दे सकते; **द्रव्य**—धन को; **दण्ड**—दण्ड को; **आमारे**—मुझे; **जानाय**—वे बतलाते हैं।

अनुवाद

"राजा का इसमें क्या दोष है? वह तो सरकार का धन चाहता है। किन्तु जब वे सरकार को जो देय है चुकता नहीं करते, तो दण्डित होते हैं, और वे मेरे पास छुड़वाने के लिए आते हैं।

राजा गोपीनाथे यदि चाङ्गे चड़ाइल ।
चारि-बारे लोके आसि' मोरे जानाइल ॥ ६३॥

राजा गोपीनाथे यदि चाङ्गे चड़ाइल ।
चारि-बारे लोके आसि' मोरे जानाइल ॥ ६३॥

राजा—राजा ने; **गोपीनाथे**—गोपीनाथ को; **यदि**—जब; **चाङ्गे**—चांग पर; **चड़ाइल**—चढ़ाया; **चारि-बारे**—चार बार; **लोके**—दूतों ने; **आसि'**—आकर; **मोरे**—मुझे; **जानाइल**—सूचित किया।

अनुवाद

"जब राजा ने गोपीनाथ पट्टनायक को चाँग पर चढ़ाया, तो सन्देशवाहक मुझे इस घटना के विषय में बताने के लिए चार बार आये।

ভিক্ষুক সন্ন্যাসী আমি নির্জন-বাসী ।
আমায় দুঃখ দেয়, নিজ-দুঃখ কহি' আসি' ॥৬৪॥

भिक्षुक सन्यासी आमि निर्जन-वासी ।
आमाय दुःख देय, निज-दुःख कहि' आसि' ॥ ६४॥

भिक्षुक—भिक्षुक; **सन्यासी**—यति; **आमि**—मैं; **निर्जन-वासी**—निर्जन में निवास करनेवाला; **आमाय**—मुझे; **दुःख**—दुःख; **देय**—वे देते हैं; **निज-दुःख**—उनका निज दुःख; **कहि'**—कहते हैं; **आसि'**—आकर।

अनुवाद

"मैं भिक्षुक संन्यासी के रूप में एकान्त स्थान में अकेला रहना चाहता हूँ, किन्तु ये लोग अपना दुःख मुझे बताने चले आते हैं और मुझे क्षुब्ध करते हैं।

আজি তারে জগন্নাথ করিলা রক্ষণ ।
কালি কে রাখিবে, যদি না দিবে রাজ-ধন? ॥৬৫॥

आजि तारे जगन्नाथ करिला रक्षण ।
कालि के राखिबे, यदि ना दिबे राज-धन? ॥ ६५॥

आजि—आज; **तारे**—उसको; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ ने; **करिला रक्षण**—रक्षण दिया है; **कालि**—कल; **के राखिबे**—कौन रक्षा करेगा; **यदि**—यदि; **ना दिबे**—वह भुगतान नहीं करेगा; **राज-धन**—राजा के धन का।

अनुवाद

"आज जगन्नाथ जी ने उसे एक बार मृत्यु से बचा लिया है, किन्तु यदि कल वह पुनः खजाने की बकाया राशि को नहीं चुकता, तो उसे कौन संरक्षण देगा?

तात्पर्य

पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् निश्चय ही उस भक्त की रक्षा करेंगे, जो संयोगवश कोई पाप करता है। जैसाकि *भगवद्गीता* (९.३०-३१) में भगवान् कहते हैं :

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः॥

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति।
कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति॥

"यदि कोई जघन्य से जघन्य कर्म करता है, किन्तु यदि वह भक्ति में रत रहता है, तो उसे साधु मानना चाहिए, क्योंकि वह अपने संकल्प में अडिग रहता है। वह शीघ्र ही धर्मात्मा बन जाता है और स्थायी शान्ति को प्राप्त करता है। हे कुन्ती पुत्र, निर्भय होकर घोषणा कर दो कि मेरे भक्त का कभी विनाश नहीं होता।" किन्तु यदि कोई तथाकथित भक्त जानबूझकर इस आशा से निरन्तर पाप कर्म करता है कि कृष्ण उसे संरक्षण प्रदान करेंगे, तो कृष्ण उसकी रक्षा नहीं करेंगे। इसीलिए श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, *"कालि के राखिबे, यदि ना दिबे राजधन?*—आज तो जगन्नाथ जी ने गोपीनाथ पट्टनायक को राजा द्वारा मारे जाने से बचा लिया है, किन्तु यदि वह यही पाप फिर से करता है, तो उसे कौन संरक्षण प्रदान करेगा?" इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ऐसे समस्त मूर्ख भक्तों को सतर्क करते हैं कि यदि वे इसी तरह पाप करते रहे, तो जगन्नाथ जी उनकी रक्षा नहीं करेंगे।

বিষয়ীর বার্তা শুনি' ক্ষুব্ধ হয় মন ।
তাতে ইহাঁ রহি' মোর নাহি প্রয়োজন'' ॥৬৬॥

विषयीर वार्ता शुनि' क्षुब्ध हय मन ।
ताते इहाँ रहि' मोर नाहि प्रयोजन" ॥६६॥

विषयीर—भौतिकवादी व्यक्तियों के; **वार्ता**—समाचार; **शुनि'**—सुनकर; **क्षुब्ध**—क्षुभित; **हय**—होता है; **मन**—मन; **ताते**—अतएव; **इहाँ रहि'**—यहाँ पर निवास; **मोर**—मेरा; **नाहि प्रयोजन**—आवश्यक नहीं।

अनुवाद

"यदि मैं भौतिकतावादी व्यक्तियों के कार्यों के विषय में सुनता हूँ, तो मेरा मन क्षुब्ध हो उठता है। यहाँ पर मेरे रुकने तथा इस तरह से क्षुब्ध होने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

কাশী-মিশ্র কহে প্রভুর ধরিয়া চরণে ।
''তুমি কেনে এই বাতে ক্ষোভ কর মনে? ॥৬৭॥

काशी-मिश्र कहे प्रभुर धरिया चरणे ।
"तुमि केने एइ बाते क्षोभ कर मने? ॥ ६७॥

काशी-मिश्र कहे—काशी मिश्र ने कहा; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **धरिया चरणे**—चरणों को पकड़कर; **तुमि**—आप; **केने**—क्यों; **एइ बाते**—इन वार्ताओं से; **क्षोभ कर**—क्षुब्ध होते हैं; **मने**—मन में।

अनुवाद

काशी मिश्र ने महाप्रभु के चरणकमल पकड़ लिये और कहा, "आप इन बातों से क्षुब्ध क्यों होते हैं?

সন্ন্যাসী বিরক্ত তোমার কা-সনে সম্বন্ধ? ।
ব্যবহার লাগি' তোমা ভজে, সেই জ্ঞান-অন্ধ ॥ ৬৮॥

सन्न्यासी विरक्त तोमार का-सने सम्बन्ध? ।
व्यवहार लागि' तोमा भजे, सेइ ज्ञान-अन्ध ॥ ६८॥

सन्न्यासी—यति; **विरक्त**—जिसने समस्त सम्बन्धों को सबके साथ विच्छेदित कर दिया है; **तोमार**—आपका; **का-सने**—किसके साथ; **सम्बन्ध**—सम्बन्ध; **व्यवहार लागि'**—किसी लौकिक उद्देश्यार्थ; **तोमा भजे**—भजता है; **सेइ**—वह; **ज्ञान-अन्ध**—सब ज्ञान के प्रति अन्धा है।

अनुवाद

"आप विरक्त संन्यासी हैं। आपके सम्बन्ध ही क्या हैं? जो व्यक्ति किसी भौतिक उद्देश्य से आपकी पूजा करता है, वह समस्त ज्ञान के प्रति अन्धा है।"

तात्पर्य

भौतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भगवान् का भक्त बनना भारी भूल है। अनेक लोग भौतिक लाभों के लिए दिखावटी भक्त बन जाते हैं। निस्सन्देह, भौतिकतावादी लोग कभी-कभी पेशेवर भक्ति करते हैं और पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् विष्णु को जीविकोपार्जन का साधन बनाते हैं। किन्तु इनमें से कोई भी मान्य नहीं है। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने उल्लेख किया है कि 'सप्त-शती' नामक ग्रन्थ में देवी दुर्गा की पूजा करने वाला व्यक्ति किस प्रकार उनसे नाना प्रकार के भौतिक लाभ माँगता है। सामान्य लोगों में ऐसे कार्य

अत्यन्त लोकप्रिय हैं, किन्तु ये मूर्ख तथा अन्धे व्यक्तियों के प्रयास हैं (*सेइ ज्ञान-अन्ध*)।

भौतिकतावादी वास्तव में यह नहीं जानता कि कोई भक्त क्यों बने। भक्त की एकमात्र चिन्ता भगवान् को तुष्ट करने की रहती है। श्रील रूप गोस्वामी ने शुद्ध भक्ति की परिभाषा इस प्रकार दी है :

अन्याभिलाषिताशून्यं ज्ञानकर्माद्यनावृतम्।
आनुकूल्येन कृष्णानुशीलनं भक्तिरुत्तमा॥

मनुष्य को भौतिक इच्छाओं से पूर्ण रूप से युक्त होना चाहिए और कृष्ण की सेवा केवल उन्हें प्रसन्न करने के लिए करनी चाहिए। जब लोग अपनी खुद की इन्द्रियतृप्ति में रुचि लेने लगते हैं (*भुक्ति मुक्ति सिद्धि कामी*), तो कुछ लोग जी भरकर भौतिक जगत् का भोग करना चाहते हैं, कुछ मुक्त होना और ब्रह्म में समा जाना चाहते हैं और अन्य लोग योग शक्ति से जादू करना चाहते हैं और इस तरह ईश्वर के अवतार बन जाना चाहते हैं। ये सब बातें भक्ति के नियमों के विरुद्ध हैं। मनुष्य को समस्त भौतिक इच्छाओं से रहित होना चाहिए। निर्विशेषवादी की ब्रह्म से एक हो जाने की इच्छा भी भौतिक है, क्योंकि ऐसा निराकारवादी व्यक्ति कृष्ण में तदाकार होकर उनके चरणकमलों की सेवा करने के बदले अपनी खुद की इन्द्रियों को तृप्त करना चाहता है। यदि ऐसा व्यक्ति ब्रह्म में तदाकार हो भी जाता है, तो वह पुनः इस भौतिक संसार में आ गिरता है। जैसाकि *श्रीमद्भागवत* (१०.२.३२) में कहा गया है :

आरुह्य कृच्छ्रेण परं पदं ततः
पतन्त्यधोऽनादृत युष्मदङ्घ्रयः॥

चूँकि मायावादी दार्शनिकों को भगवान् की दिव्य सेवा की कोई जानकारी नहीं होती, इसलिए उन्हें भौतिक कर्मों से मुक्ति प्राप्त कर लेने तथा ब्रह्म तेज में समा जाने के बाद भी इस भौतिक जगत् में आना पड़ता है।

তোমার ভজন-ফলে তোমাতে 'প্রেম-ধন' ।
বিষয় লাগি' তোমায় ভজে, সেই মূর্খ জন ॥৬৯॥

तोमार भजन-फले तोमाते 'प्रेम-धन' ।
विषय लागि' तोमाय भजे, सेइ मूर्ख जन ॥ ६९ ॥

तोमार—आपकी; **भजन**—भक्ति के; **फले**—फल से; **तोमाते**—आपको; **प्रेम-धन**—प्रेम की सम्पत्ति; **विषय लागि'**—भौतिक लाभ के लिए; **तोमाय भजे**—जो आपकी सेवा में निमग्न होता है; **सेइ**—वह; **मूर्ख जन**—मूर्ख।

अनुवाद

काशी मिश्र ने आगे कहा, "यदि आपकी तुष्टि के लिए कोई भक्ति में लगता है, तो फलस्वरूप उसमें आपके प्रति सुप्त प्रेम का अधिकाधिक उदय होगा। किन्तु यदि वह भौतिक उद्देश्यों के लिए आपकी भक्ति करता है, तो उसे पक्का मूर्ख समझना चाहिए।

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर की टीका है कि ऐसे अनेक भौतिकतावादी व्यक्ति हैं, जो उच्चस्तर जीवन-शैली बनाये रखने तथा अपने और अपने परिवार की इन्द्रियतृप्ति के लिए ही प्रचारक, गुरु, धर्मज्ञ या दार्शनिक बनते हैं। कभी-कभी वे संन्यासी या प्रचारक का वेश धारण करते हैं। वे अपने परिवार वालों में से कुछ को वकील बनने का प्रशिक्षण दिलाते हैं और मन्दिरों की देखभाल के बहाने धन प्राप्त करते रहने के लिए उच्च न्यायालय की सहायता लेते हैं। भले ही ऐसे लोग अपने आपको प्रचारक कह लें, वृन्दावन या नवद्वीप में रहें और अनेक धार्मिक पुस्तकें भी छाप लें, किन्तु यह सब एक ही उद्देश्य—अपनी पत्नियों और सन्तानों के परिपालनार्थ धन उपार्जन के लिए होता है। वे भागवत या अन्य शास्त्र पेशे के रूप में बाँचते हैं, मन्दिर में अर्चाविग्रह की पूजा करते हैं और शिष्यों को दीक्षित करते हैं। वे भक्ति की साज-सामग्री का दिखावा करके जनता से कुछ धन भी एकत्र कर सकते हैं और अपने परिवार वालों के या निकट के सम्बन्धियों के रोग का उपचार करने के लिए उस धन का उपयोग भी कर सकते हैं। कभी-कभी वे बाबाजी बन जाते हैं अथवा दरिद्रनारायण की पूजा करने के बहाने या सामाजिक तथा राजनैतिक उत्थान के लिए धन का संग्रह करते हैं। इस तरह वे सामान्य जनता को, जिसे शुद्ध भक्ति का कोई ज्ञान नहीं होता, ठगकर अपनी इन्द्रियतृप्ति के

लिए धन संग्रह करने हेतु व्यापारिक योजनाओं का जाल बिछा देते हैं। ऐसे ठग यह नहीं समझ सकते कि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की भक्ति करने से मनुष्य भगवान् के नित्य दासत्व पद को प्राप्त कर सकता है, जो ब्रह्मा तथा अन्य देवताओं के पद से भी बड़ा है। दुर्भाग्यवश मूर्खों को भक्ति के शाश्वत आनन्द की कोई जानकारी नहीं होती।

तोमा लागि' रामानन्द राज्य त्याग कैला ।
तोमा लागि' सनातन 'विषय' छाड़िला ॥७०॥

तोमा लागि' रामानन्द राज्य त्याग कैला ।
तोमा लागि' सनातन 'विषय' छाड़िला ॥७०॥

तोमा लागि'—आपके निमित्त; **रामानन्द**—रामानन्द राय; **राज्य**—राज्य का; **त्याग कैला**—त्याग किया; **तोमा लागि'**—आपके लिए; **सनातन**—सनातन गोस्वामी; **विषय**—भौतिक जीवन को; **छाड़िला**—छोड दिया।

अनुवाद

"आपके लिए ही रामानन्द राय ने दक्षिण भारत का राज्यपाल पद (गवर्नरी) और सनातन गोस्वामी ने मन्त्री पद का परित्याग किया।

तोमा लागि' रघुनाथ सकल छाड़िल ।
हेथाय ताहार पिता विषय पाठाइल ॥७१॥

तोमा लागि' रघुनाथ सकल छाड़िल ।
हेथाय ताहार पिता विषय पाठाइल ॥७१॥

तोमा लागि'—आपके निमित्त; **रघुनाथ**—रघुनाथ दास; **सकल छाड़िल**—सब कुछ छोड दिया; **हेथाय**—यहाँ पर; **ताहार पिता**—उसके पिता ने; **विषय पाठाइल**—धन भेजा था।

अनुवाद

"आपके लिए ही रघुनाथ दास ने अपने पारिवारिक सम्बन्ध त्याग दिये। उसके पिता ने उसकी सेवा के लिए यहाँ धन तथा जन भेजे थे।

तोमार चरण-कृपा हञाछे ताहारे ।
छत्रे मागि' खाय, 'विषय' स्पर्श नाहि करे ॥७२॥

तोमार चरण-कृपा हञाछे ताहारे ।
छत्रे मागि' खाय, 'विषय' स्पर्श नाहि करे ॥७२॥

तोमार चरण—आपके चरणकमलों की; **कृपा**—कृपा; **हञाछे**—हुई है; **ताहारे**—उसके ऊपर; **छत्रे**—भोजन वितरक केन्द्रों से; **मागि'**—भीख माँगकर; **खाय**—वह खाता है; **विषय**—धन का; **स्पर्श नाहि करे**—स्पर्श नहीं करता।

अनुवाद

"फिर भी चूँकि उसे आपके चरणकमलों की कृपा प्राप्त हो चुकी है, इसलिए उसने अपने पिता का धन नहीं लिया है। उल्टे वह लंगर से भीख माँगकर भोजन करता है।

रामानन्देर भाई गोपीनाथ-महाशय ।
तोमा हैते विषय-वाञ्छा, तार इच्छा नय ॥७३॥

रामानन्देर भाइ गोपीनाथ-महाशय ।
तोमा हैते विषय-वाञ्छा, तार इच्छा नय ॥७३॥

रामानन्देर—रामानन्द के; **भाइ**—भाई; **गोपीनाथ**—गोपीनाथ पट्टनायक; **महाशय**—महान् सज्जन व्यक्ति; **तोमा हैते**—आपसे; **विषय-वाञ्छा**—भौतिक लाभ की कामना; **तार इच्छा**—उसकी इच्छा; **नय**—नहीं है।

अनुवाद

"गोपीनाथ पट्टनायक अच्छा भद्र व्यक्ति है। वह आपसे भौतिक लाभ की इच्छा नहीं करता।

तार दुःख देखि' तार सेवकादि-गण ।
तोमारे जानाइल,—याते 'अनन्य-शरण' ॥७४॥

तार दुःख देखि' तार सेवकादि-गण ।
तोमारे जानाइल,—ग्राते 'अनन्य-शरण' ॥७४॥

तार—उसकी; **दुःख**—दुःखित दशा को; **देखि'**—देखकर; **तार**—उसके; **सेवक-आदि-गण**—सेवक एवं सुहृद्जनों ने; **तोमारे जानाइल**—आपको निवेदित किया; **ग्राते**—क्योंकि; **अनन्य**—अन्य कोई; **शरण**—आश्रय।

अनुवाद

"यह गोपीनाथ नहीं था जिसने उन सारे व्यक्तियों को इसलिए भेजा कि आप उसे दयनीय दशा से मुक्त करा दें, प्रत्युत उसके मित्रों तथा सेवकों ने उसकी क्लेशग्रस्त अवस्था देखकर आपको सूचित किया था, क्योंकि उन सबों को ज्ञात था कि गोपीनाथ आपका शरणागत है।

सेई 'शुद्ध-भक्त', ये तोमा भजे तोमा लागि' ।
आपनार सुख-दुःखे हय भोग-भोगी' ॥ ७५ ॥

सेई 'शुद्ध-भक्त', ये तोमा भजे तोमा लागि' ।
आपनार सुख-दुःखे हय भोग-भोगी' ॥ ७५ ॥

सेइ—वह; **शुद्ध-भक्त**—शुद्ध भक्त; **ये**—जो; **तोमा भजे**—आपको भजता है; **तोमा लागि'**—आपकी सन्तुष्टि निमित्त; **आपनार सुख-दुःखे**—निजी सुख तथा दुःख के निमित्त; **हय**—है; **भोग-भोगी**—जो इस भौतिक जगत् को भोगना चाहता है।

अनुवाद

"गोपीनाथ पट्टनायक शुद्ध भक्त है और वह आपकी पूजा केवल आपकी तुष्टि के लिए करता है। वह अपने सुख या दुःख की तनिक भी परवाह नहीं करता, क्योंकि यह तो भौतिकतावादी का कार्य है।

तोमार अनुकम्पा चाहे, भजे अनुक्षण ।
अचिराञ्मिले ताँरे तोमार चरण ॥ ७६ ॥

तोमार अनुकम्पा चाहे, भजे अनुक्षण ।
अचिरात् मिले ताँरे तोमार चरण ॥ ७६ ॥

तोमार—आपकी; **अनुकम्पा**—कृपा; **चाहे**—चाहता है; **भजे अनुक्षण**—चौबीसों घण्टे भजन में लगा रहता है; **अचिरात्**—अति शीघ्र; **मिले**—प्राप्त होते हैं; **ताँरे**—उसको; **तोमार चरण**—आपके चरणकमल।

अनुवाद

"जो व्यक्ति चौबीसों घण्टे आपकी सेवा में एकमात्र आपकी कृपा की कामना करते हुए लगा रहता है, वह शीघ्र ही आपके चरणकमलों की शरण प्राप्त करेगा।

তত্তেঽনুকম্পাং সু-সমীক্ষমাণো
ভুঞ্জান এবাত্ম-কৃতং বিপাকম্ ।
হৃদ্বাগ্বপুর্ভির্বিদধন্নমস্তে
জীবেত যো মুক্তি-পদে স দায়-ভাক্ ॥৭৭॥

তত্তেঽনুকম্পাং সু-সমীক্ষমাণো
ভুঞ্জান এবাত্ম-কৃতং বিপাকম্ ।
হৃদ্বাগ্বপুর্ভির্বিদধন্নমস্তে
জীবেত যো মুক্তি-পদে স দায়-ভাক্ ॥৭৭॥

তৎ—অতএব; **তে**—আপকে; **অনুকম্পাম্**—অনুগ্রह की; **সু-সমীক্ষমাণঃ**—याचना करते हुए; **ভুঞ্জানঃ**—सहन करते हुए; **এব**—निश्चय ही; **আত্ম-কৃতম্**—अपने द्वारा किया गया; **বিপাকম্**—सकाम फल; **হৃৎ**—हृदय के द्वारा; **বাক্**—वाणी; **বপুর্ভিঃ**—तथा शरीर; **বিদধৎ**—समर्पित करते हुए; **নমঃ**—प्रणतियाँ; **তে**—आपके प्रति; **জীবেত**—जीवित रहे; **যঃ**—जो कोई भी; **মুক্তি-পদে**—भक्ति में; **সঃ**—वह; **দায়-ভাক্**—प्रामाणिक योग्य व्यक्ति है।

अनुवाद

"'जो आपकी कृपा की कामना करता है और इस तरह अपने विगत कर्मों के फलस्वरूप सारी विपरीत परिस्थितियों को सहता है, जो अपने मन, वाणी तथा शरीर से आपकी भक्ति में सदा लगा रहता है और जो आपको सदैव नमस्कार करता है, वह निश्चय ही आपका अनन्य भक्त होने के लिए सही पात्र है।'

तात्पर्य

यह श्लोक *श्रीमद्भागवत* (१०.१४.८) से लिया गया है।

এথা তুমি বসি' রহ, কেনে যাবে আলালনাথ? ।
কেহ তোমা না শুনাবে বিষয়ীর বাৎ ॥৭৮॥

এথা তুমি বসি' রহ, কেনে যাবে আলালনাথ? ।
কেহ তোমা না শুনাবে বিষয়ীর বাত্ ॥৭৮॥

এথা—यहाँ पर; **তুমি**—आप; **বসি'**—निवास करते हुए; **রহ**—कृपया रहें; **কেনে**—क्यों; **যাবে**—आप जायेंगे; **আলালনাথ**—आलालनाथ; **কেহ তোমা না শুনাবে**—कोई आपको नहीं बताएगा; **বিষয়ীর বাত্**—विषयी व्यक्तियों के बारे में।

अनुवाद

"आप कृपा करके यहाँ जगन्नाथपुरी में रहें। आप आलालनाथ क्यों जायें? अब से कोई भी व्यक्ति आपके पास भौतिक विषयों के लिए नहीं आयेगा।"

यदि वा तोमार तारे राखिते हय मन ।
आजि ये राखिल, सेई करिबे रक्षण'' ॥७९॥

यदि वा तोमार तारे राखिते हय मन ।
आजि ये राखिल, सेइ करिबे रक्षण" ॥७९॥

यदि वा—यदि किसी भी प्रकार से; **तोमार**—आपका; **तारे**—उसकी; **राखिते**—रक्षा करने का; **हय**—है; **मन**—मन; **आजि**—आज; **ये**—जिसने; **राखिल**—रक्षा की है; **सेइ**—वे; **करिबे रक्षण**—रक्षण देंगे।

अनुवाद

अन्त में काशीमिश्र ने महाप्रभु को बतलाया, "यदि आप गोपीनाथ को संरक्षण प्रदान करना चाहते हैं, तो भगवान् जगन्नाथ भविष्य में भी उसी तरह उसकी रक्षा करते रहेंगे, जिस प्रकार कि आज उन्होंने की है।"

एत बलि' काशी-मिश्र गेला स्व-मन्दिरे ।
मध्याह्ने प्रतापरुद्र आइला ताँर घरे ॥८०॥

एत बलि' काशी-मिश्र गेला स्व-मन्दिरे ।
मध्याह्ने प्रतापरुद्र आइला ताँर घरे ॥८०॥

एत बलि'—इतना कहकर; **काशी-मिश्र**—काशी मिश्र; **गेला**—गये; **स्व-मन्दिरे**—अपने मन्दिर में; **मध्याह्ने**—मध्याह्न में; **प्रतापरुद्र**—राजा प्रतापरुद्र; **आइला**—आये; **ताँर घरे**—उनके घर पर।

अनुवाद

यह कहकर काशी मिश्र श्री चैतन्य महाप्रभु के स्थान से अपने मन्दिर लौट गये। दोपहर में राजा प्रतापरुद्र काशी मिश्र के घर आये।

प्रतापरुद्रेर एक आछये नियमे ।
यत दिन रहे तेँह श्री-पुरुषोत्तमे ॥ ८१ ॥

प्रतापरुद्रेर एक आछये नियमे ।
यत दिन रहे तेंह श्री-पुरुषोत्तमे ॥ ८१ ॥

प्रतापरुद्रेर—राजा प्रतापरुद्र का; **एक**—एक; **आछये**—है; **नियमे**—नियम; **यत दिन**—जितने दिन; **रहे**—रहते थे; **तेंह**—वे; **श्री-पुरुषोत्तमे**—जगन्नाथ पुरी में।

अनुवाद

जब तक राजा प्रतापरुद्र पुरुषोत्तम में रहे, उन्होंने एक कार्य नियमपूर्वक किया।

नित्य आसि' करे मिश्रेर पाद संवाहन ।
जगन्नाथ-सेवार करे भियान श्रवण ॥ ८२ ॥

नित्य आसि' करे मिश्रेर पाद संवाहन ।
जगन्नाथ-सेवार करे भियान श्रवण ॥ ८२ ॥

नित्य आसि'—नित्यप्रति आकर; **करे**—करते हैं; **मिश्रेर**—काशी मिश्र के; **पाद**—चरणों का; **संवाहन**—मालिश; **जगन्नाथ-सेवार**—भगवान् जगन्नाथ की सेवा के निमित्त; **करे**—करते हैं; **भियान**—व्यवस्थाओं का; **श्रवण**—श्रवण।

अनुवाद

वे नित्य काशी मिश्र के घर उनके चरणकमलों को दबाने आते थे। वे उनसे यह भी सुनते कि भगवान् जगन्नाथ की सेवा कितनी भव्यता से की जाती है।

राजा मिश्रेर चरण यबे चापिते लागिला ।
तबे मिश्र ताँरे किछु भङ्गीते कहिला ॥ ८३ ॥

राजा मिश्रेर चरण यबे चापिते लागिला ।
तबे मिश्र ताँरे किछु भङ्गीते कहिला ॥ ८३ ॥

राजा—राजा; **मिश्रेर**—काशी मिश्र के; **चरण**—चरणकमलों का; **यबे**—जब; **चापिते लागिला**—दबाने लगे; **तबे**—उस अवसर में; **मिश्र**—काशी मिश्र ने; **ताँरे**—उनके प्रति; **किछु**—कुछ; **भङ्गीते**—संकेत के द्वारा; **कहिला**—निवेदित किया।

अनुवाद

जब राजा काशी मिश्र के पाँव दबाने लगे, तब उन्होंने राजा से संकेत द्वारा कुछ बतलाया।

''देव, शुन आर एक अपरूप बात्। ।
महाप्रभु क्षेत्र छाड़ि' याबेन आलालनाथ!'' ॥८४॥
"देव, शुन आर एक अपरूप बात्! ।
महाप्रभु क्षेत्र छाड़ि' याबेन आलालनाथ!" ॥८४॥

देव—मेरे प्रिय राजा; **शुन**—सुनो; **आर**—अन्य; **एक**—एक; **अपरूप**—असामान्य; **बात्**—समाचार; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **क्षेत्र छाड़ि'**—जगन्नाथ पुरी छोडकर; **याबेन**—जायेंगे; **आलालनाथ**—आलालनाथ को।

अनुवाद

उन्होंने कहा, "हे राजन्, एक असामान्य बात सुनिये। श्री चैतन्य महाप्रभु जगन्नाथ पुरी छोड़कर आलालनाथ जाना चाहते हैं।"

शुनि राजा दुःखी हैला, पुछिलेन कारण ।
तबे मिश्र कहे ताँरे सब विवरण ॥८५॥
शुनि राजा दुःखी हैला, पुछिलेन कारण ।
तबे मिश्र कहे ताँरे सब विवरण ॥८५॥

शुनि—सुनकर; **राजा**—राजा; **दुःखी हैला**—बहुत व्यथित हुए; **पुछिलेन**—पूछा; **कारण**—कारण; **तबे**—उस समय; **मिश्र कहे**—मिश्र ने कहा; **ताँरे**—उनको; **सब**—सब; **विवरण**—विवरण।

अनुवाद

जब राजा ने सुना कि श्री चैतन्य महाप्रभु आलालनाथ जा रहे हैं, तो वह अत्यन्त दुःखी हुआ और उसने इसका कारण पूछा। तब काशी मिश्र ने सारी बातें बताईं।

''गोपीनाथ-पट्टनायके यबे चाङ्गे चड़ाइला ।
तार सेवक सब आसि' प्रभुरे कहिला ॥८६॥

"गोपीनाथ-पट्टनायके ग्रबे चाङ्गे चड़ाइला ।
तार सेवक सब आसि' प्रभुरे कहिला ॥ ८६ ॥

गोपीनाथ-पट्टनायके—गोपीनाथ पट्टनायक को; **ग्रबे**—जब; **चाङ्गे**—चांग पर; **चड़ाइला**—उन्होंने चढाया; **तार सेवक**—उनके सेवकों ने; **सब**—सभी ने; **आसि'**—आकर; **प्रभुरे कहिला**—श्री चैतन्य महाप्रभु को सूचित किया।

अनुवाद

उन्होंने कहा, "जब गोपीनाथ पट्टनायक को चांग पर चढ़ाया गया, तो उसके सारे सेवक श्री चैतन्य महाप्रभु को बताने गये।

शुनिया क्षोभित हैल महाप्रभुर मन ।
क्रोधे गोपीनाथे कैला बहुत भर्त्सन ॥ ८७ ॥

शुनिया क्षोभित हैल महाप्रभुर मन ।
क्रोधे गोपीनाथे कैला बहुत भर्त्सन ॥ ८७ ॥

शुनिया—सुनकर; **क्षोभित हैल**—व्यग्र हुआ; **महाप्रभुर मन**—श्री चैतन्य महाप्रभु का मन; **क्रोधे**—रोष में; **गोपीनाथे**—गोपीनाथ पट्टनायक के प्रति; **कैला**—किया; **बहुत भर्त्सन**—बहुत प्रताडन।

अनुवाद

"यह सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु मन में अत्यधिक दुःखी हुए और क्रोध में आकर उन्होंने गोपीनाथ पट्टनायक की भर्त्सना की।

'अजितेन्द्रिय हञा करे राज-विषय ।
नाना असत्पथे करे राज-द्रव्य व्यय ॥ ८८ ॥

'अजितेन्द्रिय हञा करे राज-विषय ।
नाना असत् पथे करे राज-द्रव्य व्यय ॥ ८८ ॥

अजितेन्द्रिय हञा—विषयभोग में प्रमत्त होकर; **करे राज-विषय**—सरकार की सेवा करता है; **नाना असत्-पथे**—विविध पापकार्यों में; **करे राज-द्रव्य व्यय**—सरकारी द्रव्य का अपव्यय करता है।

अनुवाद

महाप्रभु ने कहा : "'चूँकि वह इन्द्रियतृप्ति के पीछे पागल रहता है,

इसलिए वह सरकारी नौकर के रूप में कार्य करता है, किन्तु वह सरकारी लगान (राजस्व) का व्यय विविध पापकर्मों में करता है।

ব্রহ্মস্ব-অধিক এই হয় রাজ-ধন ।
তাহা হরি' ভোগ করে মহা-পাপী জন ॥৮৯॥

ब्रह्मस्व-अधिक एइ हय राज-धन ।
ताहा हरि' भोग करे महा-पापी जन ॥८९॥

ब्रह्मस्व—ब्राह्मण की सम्पत्ति; **अधिक**—से भी अधिक; **एइ**—यह; **हय**—है; **राज-धन**—सरकार का धन; **ताहा हरि'**—उसका अपहरण करके; **भोग करे**—विषय भोग करता है; **महा-पापी जन**—महापापी व्यक्ति।

अनुवाद

"'सरकारी राजस्व ब्राह्मण की सम्पत्ति से अधिक पवित्र है। जो सरकारी धन को आत्मसात् करता है और इसे इन्द्रियतृप्ति के लिए व्यवहार में लाता है, वह सबसे बड़ा पापी है।

রাজার বর্তন খায়, আর চুরি করে ।
রাজ-দণ্ড্য হয় সেই শাস্ত্রের বিচারে ॥৯০॥

राजार वर्तन खाय, आर चुरि करे ।
राज-दण्ड्य हय सेइ शास्त्रेर विचारे ॥९०॥

राजार वर्तन—राजा का वेतन; **खाय**—लेता है; **आर**—और; **चुरि करे**—चोरी करता है; **राज-दण्ड्य**—राजा के द्वारा दण्डित किये जाने योग्य; **हय**—है; **सेइ**—वह; **शास्त्रेर विचारे**—शास्त्रों का निर्णय।

अनुवाद

"'जो व्यक्ति सरकारी नौकरी करता है, किन्तु सरकारी राजस्व की चोरी करता है, वह राजा द्वारा दण्डनीय है। यही समस्त शास्त्रों का मत है।

নিজ-কৌড়ি মাগে, রাজা নাহি করে দণ্ড ।
রাজা—মহা-ধার্মিক, এই হয় পাপী ভণ্ড! ॥৯১॥

निज-कौड़ि मागे, राजा नाहि करे दण्ड ।
राजा—महा-धार्मिक, एइ हय पापी भण्ड! ॥ ९१ ॥

निज-कौड़ि—उनका निजी धन; **मागे**—माँगते हैं; **राजा**—राजा; **नाहि करे दण्ड**—दण्डित नहीं करते; **राजा**—राजा; **महा-धार्मिक**—बहुत धार्मिक; **एइ**—यह व्यक्ति; **हय**—है; **पापी**—पापी; **भण्ड**—पाखण्डी।

अनुवाद

"'राजा अपना राजस्व का भुगतान चाहता था। वह बलात् दण्ड देना नहीं चाहता था। इसलिए राजा अवश्य ही अत्यन्त धार्मिक है, किन्तु गोपीनाथ पट्टनायक एक बहुत बड़ा धोखेबाज है।

রাজা-কড়ি না দেয়, আমারে ফুকারে ।
এই মহা-দুঃখ ইহাঁ কে সহিতে পারে? ॥৯২॥
राजा-कड़ि ना देय, आमारे फुकारे ।
एइ महा-दुःख इहाँ के सहिते पारे? ॥ ९२ ॥

राजा-कड़ि—राजा का धन; **ना देय**—नहीं देता; **आमारे**—मुझको; **फु-कारे**—पुकारता है; **एइ**—वह; **महा-दुःख**—बहुत दुःख; **इहाँ**—यहाँ; **के सहिते पारे**—कौन सहन कर सकता है।

अनुवाद

"'वह राजा को राजस्व नहीं देता, किन्तु छूटने के लिए मेरी सहायता चाहता है। यह तो बहुत ही पापमय कृत्य है। यहाँ पर मैं इसे सहन नहीं कर सकता।

আলালনাথ যাই' তাহাঁ নিশ্চিন্তে রহিমু ।
বিষয়ীর ভাল মন্দ বার্তা না শুনিমু''' ॥৯৩॥
आलालनाथ याइ' ताहाँ निश्चिन्ते रहिमु ।
विषयीर भाल मन्द वार्ता ना शुनिमु''' ॥ ९३ ॥

आलालनाथ याइ'—आलालनाथ जाकर; **ताहाँ**—वहाँ; **निश्चिन्ते रहिमु**—मैं शान्तिपूर्वक रहूँगा; **विषयीर**—विषयी व्यक्तियों के; **भाल मन्द**—अच्छे तथा बुरे; **वार्ता**—समाचार; **ना शुनिमु**—मैं नहीं सुनूँगा।

अनुवाद

"'इसलिए मैं जगन्नाथपुरी छोड़ दूँगा और आलालनाथ जाऊँगा, जहाँ मैं शान्तिपूर्वक रहूँगा और भौतिकतावादी लोगों की ये सब बातें नहीं सुनूँगा।'"

एत शुनि' कहे राजा पाञा मने व्यथा ।
"सब द्रव्य छाड़ों, यदि प्रभु रहेन एथा ॥९४॥

एत शुनि' कहे राजा पाञा मने व्यथा ।
"सब द्रव्य छाड़ों, यदि प्रभु रहेन एथा ॥ ९४॥

एत शुनि'—इन विवरणों को सुनकर; **कहे राजा**—राजा ने कहा; **पाञा**—पाते हुए; **मने व्यथा**—अपने मन में व्यथा को; **सब द्रव्य छाड़ों**—मैं सब अवशिष्ट राशि को छोड़ दूँगा; **यदि**—यदि; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **रहेन एथा**—यहाँ रहते हैं।

अनुवाद

जब राजा प्रतापरुद्र ने ये सारी बातें सुनीं, तो उसके मन में बहुत वेदना हुई। उसने कहा, "गोपीनाथ पर जो भी बकाया है, उसे मैं छोड़ दूँगा, यदि श्री चैतन्य महाप्रभु जगन्नाथपुरी में रहें।

एक-क्षण प्रभुर यदि पाइये दरशन ।
कोटि-चिन्तामणि-लाभ नहे तार सम ॥९५॥

एक-क्षण प्रभुर यदि पाइये दरशन ।
कोटि-चिन्तामणि-लाभ नहे तार सम ॥ ९५॥

एक-क्षण—एक पल के लिए; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **यदि**—यदि; **पाइये**—मुझे मिलता है; **दरशन**—साक्षात्कार; **कोटि-चिन्तामणि-लाभ**—करोडों चिन्तामणियों की प्राप्ति; **नहे**—नहीं है; **तार सम**—उसके समान।

अनुवाद

"यदि क्षण भर के लिए भी श्री चैतन्य महाप्रभु से मेरा साक्षात्कार हो सके, तो मैं करोड़ों चिन्तामणियों के लाभ की भी परवाह नहीं करूँगा।

কোন্ছার পদার্থ এই দুই-লক্ষ কাহন? ।
প্রাণ-রাজ্য করোঁ প্রভু-পদে নির্মঞ্ছন'' ॥৯৬॥

কোন্ ছার পদার্থ এই দুই-লক্ষ কাহন? ।
প্রাণ-রাজ্য করোঁ প্রভু-পদে নির্মঞ্ছন" ॥ ৯৬ ॥

কোন্—कौनसी; **ছার**—छोटी; **পদার্থ**—बात; **এই**—यह; **দুই-লক্ষ কাহন**—२,००,००० काहन; **প্রাণ**—जीवन; **রাজ্য**—राज्य; **করোঁ**—मैं करता हूँ; **প্রভু-পদে**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणों में; **নির্মঞ্ছন**—परित्याग।

अनुवाद

"मुझे दो लाख काहन जैसी इस छोटी राशि की परवाह नहीं है। इसकी क्या बात है, मैं तो महाप्रभु के चरणों पर अपना प्राण और राज्य समेत सर्वस्व समर्पित कर सकता हूँ।"

মিশ্র কহে, ''কৌড়ি ছাড়িবা,—নহে প্রভুর মন ।
তারা দুঃখ পায়,—এই না যায় সহন'' ॥৯৭॥

মিশ্র কহে, "কৌড়ি ছাড়িবা,—নহে প্রভুর মন ।
তারা দুঃখ পায়,—এই না য়ায় সহন" ॥ ৯৭ ॥

মিশ্র কহে—काशी मिश्र ने कहा; **কৌড়ি ছাড়িবা**—आप धन का परित्याग करें; **নহে**—नहीं है; **প্রভুর মন**—श्री चैतन्य महाप्रभु की इच्छा; **তারা**—वे; **দুঃখ পায়**—दुःखी होते हैं; **এই**—यह; **না য়ায় সহন**—सहन नहीं होता।

अनुवाद

काशी मिश्र ने राजा को इंगित किया, "महाप्रभु नहीं चाहते कि आप अपना बकाया (प्राप्य) छोड़ दें। वे तो मात्र इसलिए दुःखी हैं कि सारा परिवार दुःखी है।

রাজা কহে,—''তারে আমি দুঃখ নাহি দিয়ে ।
চাঙ্গে চড়া, খড়্গে ডারা,—আমি না জানিয়ে ॥৯৮॥

রাজা কহে,—"তারে আমি দুঃখ নাহি দিয়ে ।
চাঙ্গে চড়া, খড়্গে ডারা,—আমি না জানিয়ে ॥ ৯৮ ॥

राजा कहे—राजा ने कहा; **तारे**—उनको; **आमि**—मुझे; **दुःख**—दुःख; **नाहि दिये**—देने की इच्छा नहीं है; **चाङ्गे चड़ा**—चांग पर आरोहण; **खड्गे**—तलवारों पर; **डारा**—डालना; **आमि**—मैं; **ना जानिये**—नहीं जानता था।

अनुवाद

राजा ने उत्तर दिया, "मैं गोपीनाथ पट्टनायक तथा उसके परिवार को न तो दुःख देना चाहता था, न ही मुझे इसका पता था कि उसे चांग पर चढ़ाकर और तलवारों पर फेंककर मार डाला जायेगा।

পুরুষোত্তম-জানারে তেঁহ কৈল পরিহাস ।
সেই 'জানা' তারে দেখাইল মিথ্যা ত্রাস ॥৯৯॥

पुरुषोत्तम-जानारे तेंह कैल परिहास ।
सेइ 'जाना' तारे देखाइल मिथ्या त्रास ॥९९॥

पुरुषोत्तम-जानारे—राजकुमार पुरुषोत्तम जाना के प्रति; **तेंह**—उन्होंने; **कैल परिहास**—परिहास किया; **सेइ जाना**—उस राजपुत्र ने; **तारे**—उनके प्रति; **देखाइल**—दिखाया; **मिथ्या**—मिथ्या; **त्रास**—भय।

अनुवाद

"उसने पुरुषोत्तम जाना का परिहास किया। इसलिए राजकुमार ने दण्ड स्वरूप उसे त्रास देना चाहा था।

তুমি যাহ, প্রভুরে রাখহ যত্ন করি' ।
এই মুই তাহারে ছাড়িনু সব কৌড়ি'' ॥১০০॥

तुमि याह, प्रभुरे राखह यत्न करि' ।
एइ मुइ ताहारे छाड़िनु सब कौड़ि" ॥१००॥

तुमि—आप; **याह**—जाओ; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **राखह**—रखो; **यत्न करि'**—बहुत प्रयत्न से; **एइ मुइ**—जहाँ तक मेरी बात है; **ताहारे**—उसके प्रति; **छाड़िनु**—मैं छोड़ता हूँ; **सब कौड़ि**—सब बकाया राशि।

अनुवाद

"आप स्वयं श्री चैतन्य महाप्रभु के पास जायें और यत्नपूर्वक उन्हें

जगन्नाथपुरी में रखें। मैं गोपीनाथ पट्टनायक का सारा कर्ज माफ कर दूँगा।"

মিশ্র কহে, ''কৌড়ি ছাড়িবা,—নহে প্রভুর মনে ।
কৌড়ি ছাড়িলে প্রভু কদাচিদ্দুঃখ মানে'' ॥১০১॥

मिश्र कहे, "कौड़ि छाड़िबा,—नहे प्रभुर मने ।
कौड़ि छाड़िले प्रभु कदाचित् दुःख माने" ॥१०१॥

मिश्र कहे—काशी मिश्र बोले; **कौड़ि छाड़िबा**—आप समस्त ऋणों से उऋण करें; **नहे**—नहीं है; **प्रभुर मने**—श्री चैतन्य महाप्रभु का यह विचार; **कौड़ि छाड़िले**—यदि आप समस्त ऋणों को माफ करेंगे; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कदाचित्**—निश्चय ही; **दुख माने**—दुःखी होंगे।

अनुवाद

काशी मिश्र ने कहा, "गोपीनाथ पट्टनायक का कर्ज माफ कर देने से महाप्रभु दुःखी होंगे, क्योंकि यह उनका आशय नहीं है।"

রাজা কহে, ''কৌড়ি ছাড়িমু,—ইহা না কহিবা ।
সহজে মোর প্রিয় তা'রা,—ইহা জানাইবা ॥১০২॥

राजा कहे, "कौड़ि छाड़िमु,—इहा ना कहिबा ।
सहजे मोर प्रिय ता'रा,—इहा जानाइबा ॥१०२॥

राजा कहे—राजा बोले; **कौड़ि छाड़िमु**—मैं समस्त ऋणों को माफ कर दूँगा; **इहा**—यह; **ना कहिबा**—नहीं कहना; **सहजे**—सहज रूप से; **मोर प्रिय**—मेरे प्रिय मित्र; **ता'रा**—वे; **इहा**—यह; **जानाइबा**—उनको बताना।

अनुवाद

राजा ने कहा, "मैं गोपीनाथ पट्टनायक का सारा ऋण समाप्त कर दूँगा, किन्तु इसकी चर्चा महाप्रभु से न करें। उन्हें केवल इतना बतलायें कि भवानन्द राय के सारे पारिवारिक जन तथा गोपीनाथ पट्टनायक मेरे प्रिय मित्र हैं।

ভবানন্দ-রায়—আমার পূজ্য-গর্বিত ।
তাঁর পুত্র-গণে আমার সহজেই প্রীত'' ॥১০৩॥

भवानन्द-राय—आमार पूज्य-गर्वित ।
ताँर पुत्र-गणे आमार सहजेइ प्रीत" ॥ १०३ ॥

भवानन्द राय—भवानन्द राय; **आमार**—मेरे द्वारा; **पूज्य**—पूजा करने योग्य; **गर्वित**—सम्मान योग्य; **ताँर**—उनके; **पुत्र-गणे**—पुत्रों के प्रति; **आमार**—मेरा; **सहजेइ**—स्वाभाविक; **प्रीत**—स्नेह।

अनुवाद

"भवानन्द राय मेरी पूजा तथा सम्मान के योग्य हैं। अतएव मैं उसके पुत्रों के प्रति सहज ही स्नेहिल हूँ।"

এত বলি' মিশ্রে নমস্করি' রাজা ঘরে গেলা ।
গোপীনাথে 'বড় জানায়' ডাকিয়া আনিলা ॥ ১০৪ ॥

এত বলি' মিশ্রে নমস্করি' রাজা ঘরে গেলা ।
গোপীনাথে 'বড় জানায়' ডাকিয়া আনিলা ॥ ১০৪ ॥

এত বলি'—इतना कहकर; **মিশ্রে নমস্করি'**—काशी मिश्र को नमस्कार करने के बाद; **রাজা**—राजा; **ঘরে গেলা**—अपने महल में लौट गये; **গোপীনাথে**—गोपीनाथ पट्टनायक को; **বড় জানায়**—ज्येष्ठ राजकुमार को; **ডাকিয়া আনিলা**—बुलाया।

अनुवाद

काशी मिश्र को नमस्कार करके राजा अपने महल को चला गया। उसने गोपीनाथ और अपने ज्येष्ठ राजकुमार को बुलवाया।

রাজা কহে,—"সব কৌড়ি তোমারে ছাড়িলুঁ ।
সেই মালজাঠ্যা দণ্ড পাট তোমারে ত' দিলুঁ ॥ ১০৫ ॥

রাজা কহে,—"সব কৌড়ি তোমারে ছাড়িলুঁ ।
সেই মালজাঠ্যা দণ্ড পাট তোমারে ত' দিলুঁ ॥ ১০৫ ॥

রাজা কহে—राजा ने कहा; **সব**—समस्त; **কৌড়ি**—धन को; **তোমারে**—तुम्हारे प्रति; **ছাড়িলুঁ**—माफ करता हूँ; **সেই মালজাঠ্যা দণ্ড পাট**—मालजाठ्या दण्डपाट को; **তোমারে**—तुमको; **ত'**—निश्चय ही; **দিলুঁ**—मैं देता हूँ।

अनुवाद

राजा ने गोपीनाथ पट्टनायक से कहा, "तुम खजाने के जितने धन के

ऋणी हो, वह सब माफ किया जाता है और तुम्हें मालजाठय दण्डपाट नामक स्थान पुनः वसूली के लिए दिया जाता है।

आर वार ऐछे ना खाइह राज-धन ।
आजि हैते दिलुँ तोमाय द्विगुण वर्तन'' ॥ १०६॥

आर बार ऐछे ना खाइह राज-धन ।
आजि हैते दिलुँ तोमाय द्विगुण वर्तन" ॥ १०६॥

आर बार—अगली बार; **ऐछे**—इस प्रकार से; **ना खाइह**—अपव्यय नहीं करना; **राज-धन**—सरकारी धन का; **आजि हैते**—आज से; **दिलुँ**—मैं प्रदान करता हूँ; **तोमाय**—तुमको; **द्वि-गुण वर्तन**—दुगुना वेतन।

अनुवाद

"अब तुम पुनः सरकारी राजस्व का दुरुपयोग न करना। यदि तुम सोचते हो कि तुम्हारा वेतन अपर्याप्त है, तो अब से उसे दुगुना कर दिया जायेगा।"

एत बलि' 'नेत-धटी' तारे पराइल ।
"प्रभु-आज्ञा लञा याह, विदाय तोमा दिल'' ॥ १०७॥

एत बलि' 'नेत-धटी' तारे पराइल ।
"प्रभु-आज्ञा लञा याह, विदाय तोमा दिल" ॥ १०७॥

एत बलि'—इतना कहकर; **नेत-धटी**—रेशमी आवरण वस्त्र; **तारे पराइल**—उनको पहनाया; **प्रभु-आज्ञा लञा**—श्री चैतन्य महाप्रभु से आज्ञा लेने के बाद; **याह**—प्रस्थान करो; **विदाय**—विदाय; **तोमा**—तुमको; **दिल**—देता हूँ।

अनुवाद

यह कहकर राजा ने उसके शरीर पर एक रेशमी चादर डालकर उसे नियुक्त कर दिया। उसने कहा, "श्री चैतन्य महाप्रभु के पास जाओ और उनसे आज्ञा लेकर अपने घर चले जाना। मैं तुम्हें विदा करता हूँ। अब तुम जा सकते हो।"

পরমার্থে প্রভুর কৃপা, সেহ রহু দূরে ।
অনন্ত তাহার ফল, কে বলিতে পারে? ॥১০৮॥

परमार्थे प्रभुर कृपा, सेह रहु दूरे ।
अनन्त ताहार फल, के बलिते पारे? ॥१०८॥

परमार्थे—आध्यात्मिक उत्थान के लिए; **प्रभुर कृपा**—श्री चैतन्य महाप्रभु का अनुग्रह; **सेह**—वह; **रहु दूरे**—एक मात्र; **अनन्त**—अपरिमेय; **ताहार**—उसका; **फल**—परिणाम; **के**—कौन; **बलिते पारे**—मूल्यांकन कर सकता है।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से निश्चय ही आध्यात्मिक प्रगति की जा सकती है। निस्सन्देह, उनकी कृपा के फल का अनुमान कोई नहीं लगा सकता।

'রাজ্য-বিষয়'-ফল এই—কৃপার 'আভাসে'! ।
তাহার গণনা কারো মনে নাহি আইসে! ॥১০৯॥

'राज्य-विषय'-फल एइ—कृपार 'आभासे'! ।
ताहार गणना कारो मने नाहि आइसे! ॥१०९॥

राज्य-विषय—राज-वैभव; **फल**—परिणाम; **एइ**—यह; **कृपार आभासे**—कृपा के आभास मात्र से; **ताहार**—उसका; **गणना**—परिगणन; **कारो**—किसी के; **मने**—मन में; **नाहि आइसे**—नहीं आता।

अनुवाद

गोपीनाथ पट्टनायक ने महाप्रभु की कृपा की एक झलक मात्र से राज ऐश्वर्य का फल प्राप्त किया। इसलिए उनकी कृपा की पूरी महिमा की गणना कोई नहीं कर सकता।

কাহাঁ চাঙ্গে চড়াঞা লয় ধন-প্রাণ! ।
কাহাঁ সব ছাড়ি' সেই রাজ্যাদি-প্রদান! ॥১১০॥

काहाँ चाङ्गे चड़ाञा लय धन-प्राण! ।
काहाँ सब छाड़ि' सेइ राज्यादि-प्रदान! ॥११०॥

काहाँ—एक ओर; **चाङ्गे**—चांग पर; **चड़ाञा**—चढाकर; **लय**—ले लेता है; **धन**—सम्पत्ति; **प्राण**—जीवन; **काहाँ**—दूसरी ओर; **सब**—समस्त; **छाड़ि'**—माफ करते हुए; **सेइ**—वह; **राज्य-आदि-प्रदान**—वही राज्यपद आदि का दान।

अनुवाद

कहाँ तो गोपीनाथ पट्टनायक को मारे जाने के लिए चांग पर चढ़ाया गया था और उसका सारा धन छीन लिया गया था, और कहाँ उसका सारा ऋण समाप्त कर दिया गया और उसे उसी स्थान का संग्राहक नियुक्त कर दिया गया।

काहाँ सर्वस्व वेचि' लय, देया ना याय कौड़ि! ।
काहाँ द्विगुण वर्तन, पराय नेत-धड़ि! ॥१११॥

काहाँ सर्वस्व वेचि' लय, देया ना ग्राय कौड़ि! ।
काहाँ द्विगुण वर्तन, पराय नेत-धड़ि! ॥१११॥

काहाँ—एक ओर; **सर्वस्व**—सब सम्पत्ति; **वेचि'**—बेचकर; **लय**—लेता है; **देया ना ग्राय**—नही वसूला जाता; **कौड़ि**—कर्ज; **काहाँ**—दूसरी ओर; **द्विगुण वर्तन**—दुगुना वेतन; **पराय**—पहनाते है; **नेत-धड़ि**—रेशमी पगड़ी।

अनुवाद

कहाँ तो गोपीनाथ अपनी सारी सम्पत्ति बेचकर भी अपना बकाया चुकता नहीं कर पा रहा था, कहाँ उसका वेतन अब दुगुना हो गया और उसे रेशमी पगड़ी से सम्मानित किया गया।

प्रभुर इच्छा नाहि, ताँरे कौड़ि छाड़ाइबे ।
द्विगुण वर्तन करि' पुनः 'विषय' दिबे ॥११२॥

प्रभुर इच्छा नाहि, तारे कौड़ि छाड़ाइबे ।
द्विगुण वर्तन करि' पुनः 'विषय' दिबे ॥११२॥

प्रभुर इच्छा—प्रभु की अभिलाषा; **नाहि**—नहीं थी; **तारे कौड़ि छाड़ाइबे**—उनका ऋण माफ कर दिया जाए; **द्वि-गुण**—दुगुना; **वर्तन करि'**—वेतन बढाकर; **पुनः**—पुनः; **विषय दिबे**—उनको पुनः पद दिया जाए।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु न तो यह चाहते थे कि गोपीनाथ पट्टनायक का सरकारी बकाया समाप्त कर दिया जाय, न ही उनकी इच्छा थी कि उसका वेतन दुगना कर दिया जाय या वह पुनः उसी स्थान का संग्रहाक नियुक्त कर दिया जाय।

তথাপি তার সেবক আসি' কৈল নিবেদন ।
তাতে ক্ষুব্ধ হৈল যবে মহাপ্রভুর মন ॥ ১১৩ ॥

तथापि तार सेवक आसि' कैल निवेदन ।
ताते क्षुब्ध हैल यबे महाप्रभुर मन ॥ ११३ ॥

तथापि—फिर भी; **तार सेवक**—उनके सेवक ने; **आसि'**—आकर; **कैल निवेदन**—निवेदन किया; **ताते**—उससे; **क्षुब्ध हैल**—व्यग्र हुआ; **यबे**—जब; **महाप्रभुर मन**—श्री चैतन्य महाप्रभु का अन्तःकरण।

अनुवाद

जब गोपीनाथ पट्टनायक का सेवक श्री चैतन्य महाप्रभु के पास गया और महाप्रभु को उसकी दयनीय दशा उसने बतलाई, तो महाप्रभु कुछ क्षुब्ध तथा असन्तुष्ट हुए।

বিষয়-সুখ দিতে প্রভুর নাহি মনোবল ।
নিবেদন-প্রভাবেহ তবু ফলে এত ফল ॥ ১১৪ ॥

विषय-सुख दिते प्रभुर नाहि मनोबल ।
निवेदन-प्रभावेह तबु फले एत फल ॥ ११४ ॥

विषय—भौतिक वैभव का; **सुख**—सुख; **दिते**—प्रदान करना; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **नाहि**—नहीं है; **मनोबल**—मनोरथ; **निवेदन-प्रभावेह**—क्योंकि केवल उनको उसके विषय में सूचित किया गया था; **तबु**—तब भी; **फले एत फल**—इतना अधिक फल मिला।

अनुवाद

महाप्रभु की आन्तरिक इच्छा यह नहीं थी कि उसके भक्त को भौतिक

ऐश्वर्य का सुख मिले; फिर भी मात्र उन्हें सूचित किये जाने से ऐसा बड़ा फल प्राप्त हुआ।

কে কহিতে পারে গৌরের আশ্চর্য স্বভাব? ।
ব্রহ্মা-শিব আদি যাঁর না পায় অন্তর্ভাব ॥১১৫॥

के कहिते पारे गौरेर आश्चर्य्य स्वभाव? ।
ब्रह्मा-शिव आदि य्राँर ना पाय अन्तर्भाव ॥११५॥

के—कौन; **कहिते पारे**—अन्दाज लगा सकता है; **गौरेर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **आश्चर्य्य स्वभाव**—अद्भुत गुण; **ब्रह्मा-शिव**—ब्रह्माजी, शिवजी; **आदि**—तथा अन्य; **य्राँर**—जिनका; **ना पाय**—नहीं समझ पाते; **अन्तर्भाव**—आन्तरिक अभिप्राय।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के अद्भुत स्वभाव का अनुमान कोई नहीं लगा सकता। यहाँ तक कि ब्रह्माजी तथा शिवजी भी महाप्रभु के मनोभावों को नहीं समझ पाते।

এথা কাশী-মিশ্র আসি' প্রভুর চরণে ।
রাজার চরিত্র সব কৈলা নিবেদনে ॥১১৬॥

एथा काशी-मिश्र आसि' प्रभुर चरणे ।
राजार चरित्र सब कैला निवेदने ॥११६॥

एथा—यहाँ पर; **काशी-मिश्र**—काशी मिश्र ने; **आसि'**—आकर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **चरणे**—चरणों में; **राजार**—राजा का; **चरित्र सब**—सब आचरण; **कैला निवेदने**—सूचित किया।

अनुवाद

काशी मिश्र श्री चैतन्य महाप्रभु के पास गये और उन्हें राजा का मनोभाव विस्तार से बतलाया।

প্রভু কহে,—"কাশী-মিশ্র, কি তুমি করিলা? ।
রাজ-প্রতিগ্রহ তুমি আমা' করাইলা?" ॥১১৭॥

प्रभु कहे,—"काशी-मिश्र, कि तुमि करिला? ।
राज-प्रतिग्रह तुमि आमा' कराइला?" ॥११७॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **काशी-मिश्र**—मेरे प्रिय काशी मिश्र; **कि**—क्या; **तुमि करिला**—तुमने कर दिया; **राज-प्रतिग्रह**—राजा से ग्रहण करना; **तुमि**—तुमने; **आमा'**—मुझे; **कराइला**—करवाया है।

अनुवाद

राजा के साथ काशी मिश्र की चालों को सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "हे काशी मिश्र, तुमने यह क्या किया? तुमने तो मुझे राजा से अप्रत्यक्ष रूप से सहायता लेने को बाध्य किया है।"

तात्पर्य

जब राजा ने गोपीनाथ पट्टनायक के दुर्भाग्यपूर्ण तिरस्कार का विस्तृत विवरण सुना, तो उसने उसका बकाया माफ कर देना चाहा, विशेषत: इसलिए कि उसे लगा कि इस घटना से श्री चैतन्य महाप्रभु अत्यन्त क्षुब्ध हुए हैं। महाप्रभु को यह बात अच्छी नहीं लगी कि गोपीनाथ पट्टनायक की बकाया-समप्ति अप्रत्यक्ष रूप से उन पर कृपा हो। इसीलिए उन्होंने तुरन्त विरोध किया।

মিশ্র কহে,—"শুন, প্রভু, রাজার বচনে ।
অকপটে রাজা এই কৈলা নিবেদনে ॥১১৮॥

মিশ্র কহে,—"শুন, প্রভু, রাজার বচনে ।
অকপটে রাজা এই কৈলা নিবেদনে ॥১১৮॥

मिश्र कहे—काशी मिश्र ने कहा; **शुन**—कृपया सुनिये; **प्रभु**—हे प्रिय प्रभु; **राजार वचने**—राजा का वचन; **अकपटे**—कपटरहित; **राजा**—राजा ने; **एइ**—यह; **कैला निवेदने**—निवेदन किया है।

अनुवाद

काशी मिश्र ने कहा : "हे प्रभु, राजा ने बिना किसी कपट के ऐसा किया है। कृपया उसका निवेदन तो सुनें।

'প্রভু যেন নাহি জানেন,—রাজা আমার লাগিয়া ।
দুই-লক্ষ কাহন কৌড়ি দিলেক ছাড়িয়া ॥১১৯॥

'प्रभु येन नाहि जानेन,—राजा आमार लागिया ।
दुइ-लक्ष काहन कौड़ि दिलेक छाड़िया ॥ ११९ ॥

प्रभु—श्री चैतन्य महाप्रभु; **येन**—जिससे; **नाहि जानेन**—नहीं विचार करें; **राजा**—राजा ने; **आमार लागिया**—मेरे लिए; **दुइ-लक्ष काहन कौड़ि**—कौडीयों के २,००,००० काहन; **दिलेक छाड़िया**—छोड़ दिये।

अनुवाद

"राजा ने कहा, 'महाप्रभु से इस तरह कहें कि वे यह न सोचें कि राजा ने उनके लिए दो लाख काहन कौड़ियाँ छोड़ दी हैं।

तात्पर्य

कौड़ी अमरीकी सेंट या जापानी येन की तरह है। प्राचीन लेन-देन में मुद्रा-की पहली इकाई एक छोटा शंख थी जो कौड़ी कहलाती थी। चार कौड़ी का एक गण्डा होता था, बीस गण्डे का एक पण तथा सोलह पण का एक काहन होता था। गोपीनाथ पट्टनायक पर सरकार के दो लाख काहन का बकाया था। राजा ने यह बकाया समाप्त कर दिया, उसे पुनः उसके पद पर नियुक्त कर दिया और उसका वेतन दुगुना कर दिया।

ভবানন্দের পুত্র সব—মোর প্রিয়তম ।
ইঁহা-সবাকারে আমি দেখি আত্ম-সম ॥ ১২০ ॥

भवानन्देर पुत्र सब—मोर प्रियतम ।
इँहा-सबाकारे आमि देखि आत्म-सम ॥ १२० ॥

भवानन्देर—भवानन्द राय के; **पुत्र सब**—सभी पुत्र; **मोर**—मेरे; **प्रियतम**—अत्यधिक प्रिय; **इँहा-सबाकारे**—वे सभी; **आमि**—मैं; **देखि**—देखता हूँ; **आत्म-सम**—मेरे सम्बन्धियों के रूप में।

अनुवाद

"'श्री चैतन्य महाप्रभु से यह बताओ कि भवानन्द के सारे पुत्र मुझे विशेष रूप से प्रिय हैं। मैं उन्हें अपने परिवार के सदस्यों जैसा मानता हूँ।

অতএব যাহাঁ যাহাঁ দেই অধিকার ।
খায়, পিয়ে, লুটে, বিলায়, না করোঁ বিচার ॥ ১২১ ॥

अतएव ग्राहाँ ग्राहाँ देइ अधिकार ।
खाय, पिये, लुटे, विलाय, ना करों विचार ॥ १२१ ॥

अतएव—अतएव; **ग्राहाँ ग्राहाँ**—जहाँ जहाँ; **देइ अधिकार**—मैं उनको नियुक्त करता हूँ; **खाय**—वे खाते हैं; **पिये**—पीते हैं; **लुटे**—लूटते हैं; **विलाय**—वितरित करते हैं; **ना करों विचार**—मैं विचार नहीं करता।

अनुवाद

"'इसलिए मैंने उन्हें विभिन्न स्थानों पर संग्राहक के रूप में नियुक्त कर दिया है और यद्यपि वे सरकारी धन व्यय करते हैं, खाते, पीते, लूटते तथा मनमाना बाँटते हैं, किन्तु मैं इन्हें गम्भीरता से नहीं लेता।

রাজমহিন্দার 'রাজা' কৈনু রাম-রায় ।
যে খাইল, যেবা দিল, নাহি লেখা-দায় ॥ ১২২ ॥

राजमहिन्दार 'राजा' कैनु राम-राय ।
ग्रे खाइल, ग्रेबा दिल, नाहि लेखा-दाय ॥ १२२ ॥

राजमहिन्दार—राजमहेन्द्री नामक स्थान का; **राजा**—शासक; **कैनु**—मैंने बनाया; **राम-राय**—रामानन्द राय को; **ग्रे खाइल**—जो भी धन उन्होंने ग्रहण किया; **ग्रेबा**—जो भी; **दिल**—वितरित किया; **नाहि लेखा-दाय**—उसका कोई हिसाब नहीं है।

अनुवाद

"'मैंने रामानन्द राय को राजमहेन्द्री का राज्यपाल (गवर्नर) बना दिया था। उसने उस पद पर रहकर कितना धन एकत्र किया और बाँटा, इसका कोई लेखा-जोखा नहीं है।

तात्पर्य

राजमहेन्द्री के पास एक प्रसिद्ध रेलवे स्टेशन है। श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती की टिप्पणी है कि वर्तमान राजमहेन्द्री शहर गोदावरी के उत्तरी किनारे पर स्थित है। किन्तु जब रामानन्द राय राज्यपाल थे, तब राज्य की राजधानी विद्यानगर या विद्यापुर कहलाती थी, जो गोदावरी के दक्षिणी तट पर गोदावरी तथा समुद्र के संगम पर स्थित थी। तब वह राजमहेन्द्री नामक देश का अंग था। कलिंग देश का उत्तरी भाग उत्कलिंग या उड़ीसा प्रदेश है। दक्षिणी उड़ीसा

की राजधानी राजमहेन्द्री कहलाती थी, किन्तु अब राजमहेन्द्री की स्थिति बदल गई है।

গোপীনাথ এই-মত 'বিষয়' করিয়া ।
দুই-চারি-লক্ষ কাহন রহে ত' খাঞা ॥ ১২৩ ॥

गोपीनाथ एइ-मत 'विषय' करिया ।
दुइ-चारि-लक्ष काहन रहे त' खाञा ॥ १२३ ॥

गोपीनाथ—गोपीनाथ; **एइ-मत**—इस प्रकार से; **विषय करिया**—कार्य करते हैं; **दुइ-चारि-लक्ष काहन**—दो से चार लाख काहन; **रहे त' खाञा**—स्वेच्छा से व्यय करते हैं।

अनुवाद

"'संग्राहक नियुक्त हो जाने पर गोपीनाथ पहले की ही तरह, अपनी इच्छानुसार सामान्यतया दो-चार लाख काहन खर्च करता।

কিছু দেয়, কিছু না দেয়, না করি বিচার ।
'জানা'-সহিত অপ্রীত্যে দুঃখ পাইল এই-বার ॥ ১২৪ ॥

किछु देय, किछु ना देय, ना करि विचार ।
'जाना'-सहित अप्रीत्ये दुःख पाइल एइ-बार ॥ १२४ ॥

किछु—कुछ; **देय**—वे भुगतान करतें हैं; **किछु**—कुछ; **ना देय**—वें नहीं देते; **ना करि विचार**—मैं विचार नहीं करता; **जाना सहित**—राजपुत्र के साथ; **अप्रीत्ये**—अप्रीतिकर व्यवहार के कारण; **दुःख पाइल**—उनको इतना कष्ट हुआ; **एइ-बार**—इस बार।

अनुवाद

"'गोपीनाथ पट्टनायक कुछ संग्रह करता और कुछ देता—वह इच्छानुसार खर्च करता, किन्तु मैं इसे कोई गम्भीर बात नहीं मानता। किन्तु इस बार वह राजकुमार के साथ अप्रीतिकर व्यवहार के कारण कष्ट में पड़ गया।

'জানা' এত কৈলা,—ইহা মুই নাহি জানোঁ ।
ভবানন্দের পুত্র-সবে আত্ম-সম মানোঁ ॥ ১২৫ ॥

'जाना' एत कैला,—इहा मुइ नाहि जानों ।
भवानन्देर पुत्र-सबे आत्म-सम मानों ॥ १२५ ॥

जाना—राजकुमार ने; **एत**—ऐसा; **कैला**—किया है; **इहा**—यह; **मुइ**—मैं; **नाहि जानों**—नहीं जानता था; **भवानन्देर पुत्र**—भवानन्द राय के पुत्र; **सबे**—सभी; **आत्म-सम मानों**—मैं सम्बन्धीओं की तरह मानता हूँ।

अनुवाद

"'राजकुमार ने मेरे जाने बिना ही ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी, किन्तु मैं तो भवानन्द राय के सारे पुत्रों को अपने सम्बन्धियों जैसा मानता हूँ।

তাঁহা লাগি' দ্রব্য ছাড়ি'—ইহা মাজ্জানে ।
'সহজেই মোর প্রীতি হয় তাহা-সনে'" ॥ ১২৬ ॥
তাঁহা লাগি' দ্রব্য ছাড়ি'—ইহা মাত্ জানে ।
'সহজেই মোর প্রীতি হয় তাহা-সনে'" ॥ ১২৬ ॥

তাঁহা লাগি'—उनके लिए; **দ্রব্য ছাড়ি'**—मैं कर्जा छोड़ देता हूँ; **ইহা**—यह; **মাত্ জানে**—वे नहीं जानते; **সহজেই**—स्वाभाविक रूप से; **মোর প্রীতি**—मेरे प्रति; **হয়**—है; **তাহা-সনে**—उन सभी के साथ।

अनुवाद

"'उनसे घनिष्ठ सम्बन्ध के कारण मैंने गोपीनाथ पट्टनायक का सारा बकाया समाप्त कर दिया है। श्री चैतन्य महाप्रभु यह बात नहीं जानते। मैंने जो कुछ किया है, वह भवानन्द राय के परिवार के साथ अपने घनिष्ठ सम्बन्ध के कारण किया है।'"

শুনিয়া রাজার বিনয় প্রভুর আনন্দ ।
হেন-কালে আইলা তথা রায় ভবানন্দ ॥ ১২৭ ॥
শুনিয়া রাজার বিনয় প্রভুর আনন্দ ।
হেন-কালে আইলা তথা রায় ভবানন্দ ॥ ১২৭ ॥

শুনিয়া—सुनकर; **রাজার**—राजा का; **বিনয়**—समर्पण; **প্রভুর আনন্দ**—श्री चैतन्य महाप्रभु अत्यन्त प्रसन्न हुए; **হেন-কালে**—उसी समय; **আইলা**—आये; **তথা**—वहाँ पर; **রায় ভবানন্দ**—भवानन्द राय।

अनुवाद

काशी मिश्र से राजा के मनोभावों के विषय में इन कथनों को सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु अत्यन्त प्रसन्न हुए। उसी समय भवानन्द राय भी वहाँ आ गये।

पञ्च-पुत्र-सहिते आसि' पड़िला चरणे ।
उठाञा प्रभु ताँरे कैला आलिङ्गने ॥ १२८॥

पञ्च-पुत्र-सहिते आसि' पड़िला चरणे ।
उठाञा प्रभु ताँरे कैला आलिङ्गने ॥ १२८॥

पञ्च-पुत्र-सहिते—पाँच पुत्रों के साथ; **आसि'**—आकर; **पड़िला चरणे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणों में गिर गये; **उठाञा**—उनको उठाते हुए; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **ताँरे**—उनको; **कैला आलिङ्गने**—आलिंगन किया।

अनुवाद

भवानन्द राय अपने पाँचों पुत्रों सहित श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों पर गिर पड़े और महाप्रभु ने उन्हें उठाकर उनका आलिंगन किया।

रामानन्द-राय आदि सबाइ मिलिला ।
भवानन्द-राय तबे बलिते लागिला ॥ १२९॥

रामानन्द-राय आदि सबाइ मिलिला ।
भवानन्द-राय तबे बलिते लागिला ॥ १२९॥

रामानन्द-राय आदि—रामानन्द राय एवं अन्य भाई; **सबाइ**—सब; **मिलिला**—मिले; **भवानन्द-राय**—भवानन्द राय ने; **तबे**—तब; **बलिते लागिला**—बोलना प्रारम्भ किया।

अनुवाद

इस तरह रामानन्द राय, उनके सारे भाई तथा उनके पिता श्री चैतन्य महाप्रभु से मिले। तब भवानन्द राय ने कहना प्रारम्भ किया।

"तोमार किङ्कर एই সব মোর কুল ।
এ বিপদে রাখি' প্রভু, পুনঃ নিলা মূল ॥ ১৩০॥

"तोमार किङ्कर एइ सब मोर कुल ।
ए विपदे राखि' प्रभु, पुनः निला मूल ॥ १३० ॥

तोमार किङ्कर—आपके सेवक; **एइ सब**—ये सभी; **मोर कुल**—मेरा परिवार; **ए विपदे**—इस घोर विपत्ति में; **राखि'**—रक्षा कर; **प्रभु**—मेरे प्रभु; **पुनः**—फिर एक बार; **निला मूल**—खरीद लिया है।

अनुवाद

उन्होंने कहा, "मेरे परिवार के ये सारे सदस्य आपके सनातन सेवक हैं। आपने हमें इस महान् विपत्ति से बचाया है, अतएव आपने हमें उचित मूल्य पर खरीद लिया है।

ভক্ত-বাৎসল্য এবে প্রকট করিলা ।
পূর্বে যেন পঞ্চ-পাণ্ডবে বিপদে তারিলা'' ॥ ১৩১ ॥
भक्त-वात्सल्य एबे प्रकट करिला ।
पूर्वे येन पञ्च-पाण्डवे विपदे तारिला" ॥ १३१ ॥

भक्त-वात्सल्य—अपनें भक्तों के प्रति स्नेह; **एबे**—अब; **प्रकट करिला**—आपने प्रदर्शित किया है; **पूर्वे**—पहले; **येन**—जिस प्रकार; **पञ्च-पाण्डवे**—पाँच पाण्डवों को; **विपदे**—विपत्ति में से; **तारिला**—आपने बचाया था।

अनुवाद

"अब अपने भक्तों के प्रति अपने प्रेम का प्रदर्शन किया है, जिस तरह पहले आपने पाँचों पाण्डवों को महान् विपत्ति से बचाया था।"

'নেতধটী'-মাথে গোপীনাথ চরণে পড়িলা ।
রাজার কৃপা-বৃত্তান্ত সকল কহিলা ॥ ১৩২ ॥
'नेतधटी'-माथे गोपीनाथ चरणे पड़िला ।
राजार कृपा-वृत्तान्त सकल कहिला ॥ १३२ ॥

नेतधटी-माथे—सिर पर रेशमी साफे के साथ; **गोपीनाथ**—गोपीनाथ पट्टनायक; **चरणे पड़िला**—चरणकमलों पर गिर पड़े; **राजार**—राजा की; **कृपा-वृत्तान्त**—अनुग्रह वार्ता; **सकल**—समस्त; **कहिला**—कह सुनायी।

अनुवाद

सिर पर रेशमी चादर लपेटे गोपीनाथ पट्टनायक महाप्रभु के चरणकमलों पर गिर पड़ा और राजा द्वारा अपने प्रति प्रदर्शित कृपा का विस्तार से वर्णन करने लगा।

"বাকী-কৌড়ি বাদ, আর দ্বিগুণ বর্তন কৈলা ।
পুনঃ 'বিষয়' দিয়া 'নেত-ধটী' পরাইলা ॥১৩৩॥

**"बाकी-कौड़ि बाद, आर द्विगुण वर्तन कैला ।
पुनः 'विषय' दिया 'नेत-धटी' पराइला ॥ १३३ ॥**

बाकी-कौड़ि बाद—कर्जे को माफ करते हुए; **आर**—तथा; **द्वि-गुण**—दुगुना; **वर्तन कैला**—वेतन को; **पुनः**—पुनः; **विषय दिया**—राजपद दिया; **नेत-धटी पराइला**—रेशमी साफे से अलंकृत किया।

अनुवाद

उसने कहा, "राजा ने मेरा बकाया समाप्त कर दिया है। उसने मुझे रेशमी वस्त्र से सम्मानित करते हुए मेरे पद पर मुझे पुनः नियुक्त कर दिया है और मेरा वेतन दुगना कर दिया है।

কাহাঁ চাঙ্গের উপর সেই মরণ-প্রমাদ! ।
কাহাঁ 'নেত-ধটী' পুনঃ,—এ-সব প্রসাদ! ॥১৩৪॥

**काहाँ चाङ्गेर उपर सेइ मरण-प्रमाद! ।
काहाँ 'नेत-धटी' पुनः,—ए-सब प्रसाद! ॥ १३४ ॥**

काहाँ—एक ओर; **चाङ्गेर उपर**—चांग के ऊपर; **सेइ**—वह; **मरण प्रमाद**—मृत्यु का भय; **काहाँ**—दूसरी ओर; **नेत-धटी**—रेशमी साफा; **पुनः**—पुनः; **ए-सब**—यह सब; **प्रसाद**—कृपा।

अनुवाद

"कहाँ मुझे मार डालने के लिए चांग पर चढ़ा दिया गया था और कहाँ उल्टे मुझे रेशमी वस्त्र से सम्मानित किया गया। यह सब आपकी कृपा है।

চাঙ্গের উপরে তোমার চরণ ধ্যান কৈলুঁ ।
চরণ-স্মরণ-প্রভাবে এই ফল পাইলুঁ ॥১৩৫॥

चाङ्गेर उपरे तोमार चरण ध्यान कैलुँ ।
चरण-स्मरण-प्रभावे एइ फल पाइलुँ ॥ १३५ ॥

चाङ्गेर उपरे—चांग के ऊपर; **तोमार चरण**—आपके चरणकमलों पर; **ध्यान कैलुँ**—मैंने ध्यान किया; **चरण-स्मरण-प्रभावे**—आपके चरणकमलों के स्मरण की शक्ति से; **एइ फल**—ये फल; **पाइलुँ**—मैंने पाये।

अनुवाद

"चांग पर मैंने आपके चरणकमलों का ध्यान करना प्रारम्भ किया और उस स्मरण की शक्ति से यह सब फल प्राप्त हुआ।

লোকে চমৎকার মোর এ সব দেখিয়া ।
প্রশংসে তোমার কৃপা-মহিমা গাঞা ॥১৩৬॥

लोके चमत्कार मोर ए सब देखिया ।
प्रशंसे तोमार कृपा-महिमा गाञा ॥ १३६ ॥

लोके—लोगों में; **चमत्कार**—महान् आश्चर्य; **मोर**—मेरा; **ए सब**—यह सब; **देखिया**—देखकर; **प्रशंसे**—वे प्रशंसा करते हैं; **तोमार**—आपकी; **कृपा**—कृपा की; **महिमा**—महानता; **गाञा**—गाकर।

अनुवाद

"मेरा यह सब देखकर आश्चर्यचकित जनता आपकी कृपा की महानता का वर्णन कर रही है।

কিন্তু তোমার স্মরণের নহে এই 'মুখ্য-ফল' ।
'ফলাভাস' এই,—যাতে 'বিষয়' চঞ্চল ॥১৩৭॥

किन्तु तोमार स्मरणेर नहे एइ 'मुख्य-फल' ।
'फलाभास' एइ,—ग्राते 'विषय' चञ्चल ॥ १३७ ॥

किन्तु—परन्तु; **तोमार**—आपके; **स्मरणेर**—स्मरण का; **नहे**—नहीं है; **एइ**—यह; **मुख्य-फल**—प्रधान फल; **फल-आभास**—फल का आभास है; **एइ**—यह; **ग्राते**—क्योंकि; **विषय**—भौतिक वैभव; **चञ्चल**—चलायमान है।

अनुवाद

"किन्तु हे प्रभु, आपके चरणकमलों का ध्यान करने का मुख्य फल यह नहीं है। भौतिक ऐश्वर्य नश्वर है, अतएव यह तो आपकी कृपा के फल की एक झलक मात्र है।

तात्पर्य

मनुष्य श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों का केवल ध्यान करके सर्वोच्च सिद्धि प्राप्त कर सकता है। सामान्यतया लोग चार धार्मिक सिद्धान्तों—धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष के लिए चिन्तित रहते हैं। किन्तु जैसाकि *श्रीमद्भागवत* में इंगित हुआ है (*धर्मः प्रोज्झित कैतवोऽत्र*), ये चार प्रकार के भौतिक तथा आध्यात्मिक लाभ वास्तव में भक्ति के वास्तविक फल नहीं हैं। भक्ति का वास्तविक फल तो प्रत्येक दशा में कृष्ण के प्रति सुप्त प्रेम का विकास है। श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से गोपीनाथ पट्टनायक यह समझ सका कि उसे जो भौतिक लाभ हुआ था, वह महाप्रभु के चरणकमलों का ध्यान करने का आखरी फल नहीं था। वास्तविक फल तो तब मिलता है, जब मनुष्य भौतिक ऐश्वर्य से विरक्त हो जाता है। इसलिए गोपीनाथ पट्टनायक ने ऐसी विरक्ति के लिए महाप्रभु से विनती की।

রাম-রায়ে, বাণীনাথে কৈলা 'নির্বিষয়' ।
সেই কৃপা মোতে নাহি, যাতে ঐছে হয়! ॥১৩৮॥

রাম-রায়ে, বাণীনাথে কৈলা 'নির্বিষয়' ।
সেই কৃপা মোতে নাহি, যাতে ঐছে হয়! ॥ ১৩৮ ॥

রাম-রায়ে—रामानन्द राय को; **বাণীনাথে**—वाणीनाथ राय को; **কৈলা**—आपने किया है; **নির্বিষয়**—भौतिक आसक्तियों से मुक्त; **সেই কৃপা**—वैसा अनुग्रह; **মোতে নাহি**—मुझे नहीं मिला; **যাতে**—जिससे; **ঐছে**—ऐसा; **হয়**—है।

अनुवाद

"आपकी वास्तविक कृपा तो रामानन्द राय तथा वाणीनाथ राय को मिली है, क्योंकि आपने उन्हें समस्त भौतिक ऐश्वर्य से विरक्त करा दिया है। मैं सोचता हूँ कि आपने मुझ पर ऐसी कृपा नहीं की।

শুদ্ধ কৃপা কর, গোসাঞি, ঘুচাহ 'বিষয়' ।
নির্বিণ্ণ হ-ইনু, মোতে 'বিষয়' না হয়'' ॥১৩৯॥

शुद्ध कृपा कर, गोसाञि, घुचाह 'विषय' ।
निर्विण्ण ह-इनु, मोते 'विषय' ना हय" ॥ १३९ ॥

शुद्ध कृपा—शुद्ध प्रसाद; **कर**—कृपया प्रदान करें; **गोसाञि**—हे प्रभु; **घुचाह विषय**—मुझे इन भौतिक विषयों से मुक्त हो जाने दें; **निर्विण्ण**—अनासक्त; **ह-इनु**—मैं हो गया हूँ; **मोते विषय ना हय**—अब मैं भौतिक विषयों में रुचि नहीं रखता हूँ।

अनुवाद

"आप मुझ पर शुद्ध कृपा करें, जिससे मैं भी विरक्त बन सकूँ। मैं अब और अधिक भौतिक भोग नहीं चाहता।"

প্রভু কহে,—সন্ন্যাসী যবে হ-ইবা পঞ্চ-জন ।
কুটুম্ব-বাহুল্য তোমার কে করে ভরণ? ॥১৪০॥

प्रभु कहे,—सन्यासी यबे ह-इबा पञ्च-जन ।
कुटुम्ब-बाहुल्य तोमार के करे भरण? ॥ १४० ॥

प्रभु कहे—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **सन्यासी**—संन्यासी; **यबे**—जब; **ह-इबा**—हो जाओगे; **पञ्च-जन**—पाँचों लोग; **कुटुम्ब-बाहुल्य**—कुल के अत्यधिक सदस्य; **तोमार**—आपके; **के**—कौन; **करे भरण**—भरण-पोषण करेगा।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "यदि तुम सबके सब संन्यासी हो जाओगे और आर्थिक-व्यापार में रुचि नहीं लोगे, तो तुम्हारे बड़े परिवार के भरण-पोषण का भार कौन उठायेगा?

মহা-বিষয় কর, কিবা বিরক্ত উদাস ।
জন্মে-জন্মে তুমি পঞ্চ—মোর 'নিজ-দাস' ॥১৪১॥

महा-विषय कर, किबा विरक्त उदास ।
जन्मे-जन्मे तुमि पञ्च—मोर 'निज-दास' ॥ १४१ ॥

महा-विषय—महत् लौकिक व्यापार; **कर**—तुम करते रहो; **किबा**—अथवा; **विरक्त**—

विरक्त; **उदास**—आसक्तिरहित; **जन्मे-जन्मे**—जन्मों जन्मों में; **तुमि पञ्च**—तुम पाँच; **मोर**—मेरे; **निज-दास**—अपने सेवक।

अनुवाद

"तुम पाँचों भाई चाहे भौतिक कार्यों में मग्न रहो या पूर्णतया विरक्त हो जाओ, तुम सभी जन्म-जन्मांतर मेरे नित्य दास हो।

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर की टीका है कि मनुष्य को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि वह कृष्ण का सनातन सेवक है। चाहे वह धनादि भौतिक कार्यकलाप में व्यस्त रहे या संन्यासी बन जाये, उसे सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि वह ईश्वर का सनातन सेवक है, क्योंकि जीव का वास्तविक पद वही है। संन्यास ग्रहण करना और आर्थिक व्यापार में लगना दोनों ही बाह्य बातें हैं। कुछ भी हो, मनुष्य को सदैव विचार करना चाहिए कि वह किस तरह कृष्ण को प्रसन्न तथा तुष्ट रखे। इस तरह बड़े-बड़े भौतिक कार्यों में लगे रहकर भी वह लिप्त नहीं होगा। ज्योंही वह भूल जाता है कि वह कृष्ण का नित्य दास है, त्योंही वह भौतिक आसक्तियों में लग जाता है। किन्तु यदि वह सचेष्ट रहे कि कृष्ण परम स्वामी हैं और वह कृष्ण का सनातन सेवक है, तो वह हर स्थिति में मुक्त होता है। भौतिक कार्यकलाप में लिप्त होना उसे प्रभावित नहीं करेगा।

কিন্তু মোর করিহ এক 'আজ্ঞা' পালন ।
'ব্যয় না করিহ কিছু রাজার মূল-ধন' ॥ ১৪২ ॥

किन्तु मोर करिह एक 'आज्ञा' पालन ।
'व्यय ना करिह किछु राजार मूल-धन' ॥ १४२ ॥

किन्तु—परन्तु; **मोर**—मेरी; **करिह**—पूर्ण करो; **एक**—एक; **आज्ञा**—आज्ञा; **पालन**—का पालन; **व्यय ना करिह**—अपव्यय कभी मत करो; **किछु**—कुछ भी; **राजार मूल-धन**—राजा का धन।

अनुवाद

"किन्तु मेरी एक आज्ञा का पालन करना। राजा के लगान (राजस्व) से कुछ भी भी खर्च न करना।

तात्पर्य

जब व्यक्ति कृष्ण के नित्य दास के रूप में अपने पद को भूल जाता है, तब वह अनेक पापकर्म करता है। किन्तु जो नित्य दास के पद पर स्थिर रहता है, वह नैतिकता, धर्म तथा सच्चरित्रता के मार्ग से विचलित नहीं होता। सम्प्रति विश्वभर के लोग, विशेषतया भारत के लोग पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के साथ तथा उनके नित्य सेवकों के साथ अपने सम्बन्ध को भूल चुके हैं। इसलिए नैतिकता, धर्म तथा सच्चरित्रता के सिद्धान्तों का लोप हो चुका है। यह स्थिति मानव-समाज के लिए अत्यन्त अलाभकर है। इसलिए हर व्यक्ति को कृष्णभावना अपनाकर श्री चैतन्य महाप्रभु के सिद्धान्तों का पालन करना चाहिए।

राजार मूल-धन दिया ये किछु लभ्य हय ।
सेइ धन करिह नाना धर्मे-कर्मे व्यय ॥१४३॥

राजार मूल-धन दिया ग्रे किछु लभ्य हय ।
सेइ धन करिह नाना धर्मे-कर्मे व्यय ॥१४३॥

राजार—राजा का; **मूल-धन**—कर; **दिया**—देकर; **ग्रे किछु लभ्य हय**—जो कुछ भी उपलब्ध हो; **सेइ**—वह; **धन**—वित्त; **करिह नाना धर्मे-कर्मे व्यय**—विविध धार्मिक कार्यों में व्यय करो।

अनुवाद

"सर्वप्रथम तुम्हें राजा का लगान अदा करना चाहिए और तब जो बचे उसे तुम धार्मिक तथा सकाम कर्मों में व्यय कर सकते हो।

असद्व्यय ना करिह,——याते दुइ-लोक याय'' ।
एत बलि' सबाकारे दिलेन विदाय ॥१४४॥

असद्व्यय ना करिह,——ग्राते दुइ-लोक ग्राय" ।
एत बलि' सबाकारे दिलेन विदाय ॥१४४॥

असत्-व्यय ना करिह—पापाचरण में व्यय न करो; **ग्राते**—जिसके द्वारा; **दुइ-लोक ग्राय**—व्यक्ति इहलोक तथा परलोक गवाँ देता है; **एत बलि'**—इतना कहकर; **सबाकारे**—उन सभी को; **दिलेन विदाय**—विदाय दी।

अनुवाद

"पाप कर्मों में एक छदाम भी खर्च मत करना, क्योंकि इस तरह तुम दोनों लोकों में (इस जन्म तथा अगले जन्म में) हानि में रहोगे।" यह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन्हें विदा किया।

রায়ের ঘরে প্রভুর 'কৃপা-বিবর্ত' কহিল ।
ভক্ত-বাৎসল্য-গুণ যাতে ব্যক্ত হৈল ॥১৪৫॥

रायेर घरे प्रभुर 'कृपा-विवर्त' कहिल ।
भक्त-वात्सल्य-गुण याते व्यक्त हैल ॥ १४५ ॥

रायेर—भवानन्द राय के; **घरे**—घर पर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **कृपा-विवर्त**—कुछ अन्य प्रतीत होनेवाली कृपा; **कहिल**—कहा गया; **भक्त-वात्सल्य-गुण**—भक्तों के प्रति अति स्नेही होने का लक्षण; **याते**—जिसमें; **व्यक्त हैल**—प्रस्फुटित हुआ।

अनुवाद

इस तरह भवानन्द राय के परिवार में श्री चैतन्य महाप्रभु की महिमा का कथन होता रहा। यह कृपा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित की गई थी, यद्यपि यह इससे कुछ भिन्न प्रतीत हो रही थी।

तात्पर्य

आध्यात्मिक ज्ञान में प्रगति का फल भौतिक उन्नति नहीं है, किन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु ने गोपीनाथ पट्टनायक को परामर्श दिया कि किस तरह पापकर्म के फलों से बचकर भौतिक ऐश्वर्य का उपयोग करना चाहिए। इस उपदेश से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि महाप्रभु गोपीनाथ पट्टनायक को अपनी भौतिक स्थिति सुधारने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे। किन्तु वस्तुतः उन्होंने ऐसा नहीं किया। वास्तव में यह तो अपने भक्त के प्रति उनके महान् स्नेह की अभिव्यक्ति मात्र थी।

সবায় আলিঙ্গিয়া প্রভু বিদায় যবে দিলা ।
হরি-ধ্বনি করি' সব ভক্ত উঠি' গেলা ॥১৪৬॥

सबाय आलिङ्गिया प्रभु विदाय यबे दिला ।
हरि-ध्वनि करि' सब भक्त उठि' गेला ॥ १४६ ॥

सबाय—उन सभी को; **आलिङ्गिया**—आलिंगन करते हुए; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **विदाय**—विदाय; **ग्रबे दिला**—जब उन्होंने दी; **हरि-ध्वनि करि'**—हरध्विनि करते हुए; **सब भक्त**—समस्त भक्तगण; **उठि'**—उठकर; **गेला**—गये।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन सबों का आलिंगन किया और उन्हें विदा किया। तब सारे भक्त उठे और उच्च स्वर से 'हरि बोल' का उच्चारण करते हुए चले गये।

प्रभुर कृपा देखि' सबार हैल चमत्कार ।
ताहारा बुझिते नारे प्रभुर व्यवहार ॥ १४७॥

प्रभुर कृपा देखि' सबार हैल चमत्कार ।
ताहारा बुझिते नारे प्रभुर व्यवहार ॥ १४७॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **कृपा**—कृपा को; **देखि'**—देखकर; **सबार हैल चमत्कार**—सभी चकित हुए; **ताहारा**—वे; **बुझिते नारे**—समझ नहीं सके; **प्रभुर व्यवहार**—श्री चैतन्य महाप्रभु का व्यवहार।

अनुवाद

भवानन्द राय के परिवार पर महाप्रभु की असामान्य कृपा होते देखकर प्रत्येक व्यक्ति आश्चर्यचकित था। वे श्री चैतन्य महाप्रभु के व्यवहार को समझ नहीं सके।

तारा सबे यदि कृपा करिते साधिल ।
'आमा' हैते किछु नहे——प्रभु तबे कहिल ॥ १४८॥

तारा सबे ग्रदि कृपा करिते साधिल ।
'आमा' हैते किछु नहे——प्रभु तबे कहिल ॥ १४८॥

तारा—उन; **सबे**—सब ने; **ग्रदि**—जब; **कृपा करिते**—कृपा दिखाने के लिए; **साधिल**—विनती की; **आमा हैते किछु नहे**—मैं कुछ नहीं कर सकता; **प्रभु**—श्री चैतन्य ने; **तबे**—तब; **कहिल**—कहा था।

अनुवाद

निस्सन्देह, जब सारे भक्तों ने महाप्रभु से प्रार्थना की थी कि वे

गोपीनाथ पट्टनायक पर कृपा करें, तब महाप्रभु ने उत्तर दिया था कि वे ऐसा नहीं कर सकते।

तात्पर्य

जब मनुष्य पापी होता है, तो वह आध्यात्मिक उन्नति तथा भौतिक ऐश्वर्य दोनों का ही अवसर हाथ से खो बैठता है। यदि व्यक्ति इन्द्रियतृप्ति के लिए भौतिक जगत् का भोग करता है, तो उसका विनाश निश्चित है। भौतिक ऐश्वर्य में उन्नति पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् की प्रत्यक्ष कृपा नहीं होती, फिर भी यह भगवान् की अप्रत्यक्ष कृपा को तो दिखाती है, क्योंकि भौतिक सम्पत्ति में अत्यधिक लिप्त रहने वाला व्यक्ति भी धीरे-धीरे विरक्त होकर आध्यात्मिक पद को प्राप्त कर सकता है। तब वह भगवान् की अहैतुकी शुद्ध सेवा कर सकता है। जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने यह कहा कि *आमा हैते किछु नहे* ("यह मेरा कार्य नहीं कि कुछ करूँ"), तब उन्होंने संन्यासी का आदर्श दृष्टान्त प्रस्तुत किया। यदि संन्यासी किसी *विषयी* अर्थात् भौतिक कार्यों में लिप्त रहने वाले व्यक्ति का पक्ष लेता है, तो उसके चरित्र की निन्दा की जाती है। संन्यासी को भौतिक कार्यों में रुचि नहीं लेनी चाहिए। किन्तु यदि वह किसी विशेष व्यक्ति के प्रति स्नेहवश ऐसा करता है, तो इसे उसकी विशेष कृपा समझनी चाहिए।

গোপীনাথের নিন্দা, আর আপন-নির্বেদ ।
এই-মাত্র কহিল—ইহার না বুঝিবে ভেদ ॥ ১৪৯॥

गोपीनाथेर निन्दा, आर आपन-निर्वेद ।
एइ-मात्र कहिल—इहार ना बुझिबे भेद ॥ १४९ ॥

गोपीनाथेर निन्दा—गोपीनाथ पट्टनायक की भर्त्सना; **आर**—तथा; **आपन-निर्वेद**—उनकी उदासीनता; **एइ**—वह; **मात्र**—मात्र; **कहिल**—मैंने कहा है; **इहार**—इसका; **ना बुझिबे भेद**—कोई गम्भीर तात्पर्य नहीं समझ सकता।

अनुवाद

मैंने गोपीनाथ पट्टनायक को दण्ड तथा श्री चैतन्य महाप्रभु की उदासीनता का ही वर्णन किया है। किन्तु इस व्यवहार का गम्भीर अर्थ समझ पाना अत्यन्त कठिन है।

काशी-मिश्रे ना साधिल, राजारे ना साधिल ।
उद्योग विना महाप्रभु एत फल दिल ॥ १५० ॥

काशी-मिश्रे ना साधिल, राजारे ना साधिल ।
उद्योग विना महाप्रभु एत फल दिल ॥ १५० ॥

काशी-मिश्रे—काशी मिश्र को; **ना साधिल**—उन्होंने प्रार्थना नहीं की; **राजारे**—राजा को; **ना साधिल**—उन्होंने विनती नहीं की; **उद्योग विना**—बिना प्रयत्न; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **एत**—ऐसा; **फल**—फल; **दिल**—दिया।

अनुवाद

काशी मिश्र या राजा को स्वयं प्रार्थना किये जाने के बिना ही श्री चैतन्य महाप्रभु ने गोपीनाथ पट्टनायक को इतना अधिक दे दिया।

चैतन्य-चरित्र एइ परम गम्भीर ।
सेइ बूझे, ताँर पदे याँर मन 'धीर' ॥ १५१ ॥

चैतन्य-चरित्र एइ परम गम्भीर ।
सेइ बुझे, ताँर पदे याँर मन 'धीर' ॥ १५१ ॥

चैतन्य-चरित्र—श्री चैतन्य महाप्रभु का चरित्र; **एइ**—यह; **परम गम्भीर**—अत्यधिक गहन; **सेइ बुझे**—वह समझता है; **ताँर पदे**—उनके चरणकमलों में; **याँर**—जिसका; **मन**—चित्त; **धीर**—गम्भीर।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के मनोभाव इतने गम्भीर हैं कि कोई उन्हें तभी समझ सकता है, जब उसकी पूर्ण श्रद्धा महाप्रभु के चरणकमलों की सेवा में हो।

येइ इहाँ शुने प्रभुर वात्सल्य-प्रकाश ।
प्रेम-भक्ति पाय, ताँर विपद याय नाश ॥ १५२ ॥

येइ इहाँ शुने प्रभुर वात्सल्य-प्रकाश ।
प्रेम-भक्ति पाय, ताँर विपद याय नाश ॥ १५२ ॥

येइ—जो; **इहाँ**—इसको; **शुने**—श्रवण करता है; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **वात्सल्य-प्रकाश**—विशिष्ट अनुग्रह की अभिव्यक्ति को; **प्रेम-भक्ति**—प्रेममयी सेवा को;

पाय—प्राप्त करता है; **ताँर**—उसके; **विपद**—जीवन की भयावह स्थिति; **ग्राय नाश**—का नाश होता है।

अनुवाद

यदि कोई समझकर अथवा बिना समझे बूझे ही गोपीनाथ पट्टनायक के कार्यों तथा श्री चैतन्य महाप्रभु की उस पर अहैतुकी कृपा सम्बन्धी इस घटना को सुनता है, तो वह निश्चय ही महाप्रभु के प्रेम-भक्ति-पद को प्राप्त करेगा और उसकी सारी विपदाएँ नष्ट हो जायेंगी।

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ १५३ ॥

श्री-रूप—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—पादपद्मों में; **ग्रार**—जिसकी; **आश**—आशा; **चैतन्य-चरितामृत**—चैतन्य चरितामृत नामक ग्रन्थ का; **कहे**—व्याख्या करते हैं; **कृष्णदास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों की वन्दना करते हुए तथा सदैव उनकी कृपा की कामना करते हुए उनके चरणचिह्नों पर चलकर मैं कृष्णदास श्री चैतन्य-चरितामृत का वर्णन कर रहा हूँ।

इस प्रकार श्रीचैतन्य-चरितामृत अन्त्य लीला के अन्तर्गत गोपीनाथ पट्टनायक का उद्धार शीर्षक नौवें अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ।